रजिस्ट्री सं. डी एल--33001/94 REGISTERED NO. DL-33001/94

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 13] नई दिल्ली, शनिवार, मार्च 26, 1994 (चैत्र 5, 1916)

No. 13] NEW DELHI, SATURDAY, MARCH 26, 1994 (CHAITRA 5, 1916)

(इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके)

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I--खण्ड 1--(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	273
भाग I--खण्ड 2--(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं . . .	277
भाग I--खण्ड 3--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं . . .	--
भाग I--खण्ड 4--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	549
भाग II--खण्ड 1--अधिनियम, अध्यादेश और विनियम .	--
भाग II--खण्ड 1क--अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ .	*
भाग II--खण्ड 2--विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट . .	*
भाग II--खण्ड 3--उप-खण्ड (i)--भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल है) . . .	*
भाग II--खण्ड 3--उप-खण्ड (ii)--भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं . .	*
भाग II--खण्ड 3--उप-खण्ड (iii)--भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी में प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग II--खण्ड 4--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश .	*
भाग III--खण्ड 1--उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं . . .	273
भाग III--खण्ड 2--पेटेन्ट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस . .	291
भाग III--खण्ड 3--मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	*
भाग III--खण्ड 4--विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	2085
भाग IV--गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस . .	47
भाग V--अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला अनुपूरक .	*

*पृष्ठांक प्राप्त नहीं हुए

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	273
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	277
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence.	"
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	549
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India, (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, Published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION—4 Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	273
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	291
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners.	"
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	2085
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private bodies.	47
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi.	*

*Folio Nos. not received

भाग I—खण्ड 1
[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 12 मार्च 1994

सं० 21-प्रेज/94—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक" पुरस्कार प्रदान करने का अनुमोदन करते है :—

1. मास्टर पी० एस० अनुराग मूर्ति (मरणोपरांत)
   मार्फत श्री पी० एस० श्रीधर मूर्ति,
   प्लाट सं०-14, पब्लिक सैक्टर कालोनी,
   नोबल रोड, बोवेनपल्ली,
   सिकन्दराबाद-500011

26-7-1992 को, 14 वर्षीय बालक मास्टर पी० एस० अनुराग मूर्ति अपने माता-पिता तथा मोहल्ले के लोगो के साथ पिकनिक पर उस्मान सागर गया। जबकि बुजुर्ग लोग विश्राम गृह मे आराम कर रहे थे, मास्टर अनुराग मूर्ति अन्य बालको के साथ उस्मान सागर झील पर गया। वे झील के तट पर खेल रहे थे। इसी बीच उसी पिकनिक दल की दो महिलाएं भी उस्मान सागर के तट पर आ गई तथा झील के पानी मे उतर गई। अचानक, दोनो महिलाएं झील के पानी में गिर गई तथा मदद के लिए चिल्लाई। मास्टर अनुराग मूर्ति, तैरना न जानते हुए भी पानी मे डूबती महिलाओं को देखकर फौरन पानी में कूद गया तथा दोनों महिलाओ को बचा लिया। किन्तु उन्हें बचाने की कार्रवाई के दौरान, वह खुद पानी में डूब गया तथा अपने प्राण दे बैठा।

मास्टर अनुराग मूर्ति ने डूबने वाली दोनो महिलाओं का जीवन बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया परन्तु दुर्भाग्य से इस काम में उसकी जान चली गई।

2. से० ले० संजय गुप्ता (मरणोपरान्त)
   (आई० सी०-50808), मार्फत श्री एम० एल० गुप्ता,
   10/1, नाभा हाउस, शिमला-4

से० ले० श्री संजय गुप्ता, पुणे मे यंग आफिसर्स का अपना प्रशिक्षण पूरा करने के पश्चात 5 इंजीनियर रेजिमेंट जाने के लिए अम्बाला तक गाड़ी में आ रहे थे। तब 20 जुलाई, 1992 को उन्होने चंडीगढ़ जाने के लिए बस पकड़ी। दुर्भाग्यवश उस बस के एक पुलिया से टकरा जाने के पश्चात उसमें आग लग गई और वह पास ही की एक खाई में गिर गयी। से० ले० गुप्ता ने बिना अपना धैर्य खोए तथा सूझबूझ का परिचय देते हुए बस की पिछली ओर का शीशा तोड़ डाला तथा जलती हुई बस से बाहर निकलने के लिए कुछ छड़ों को मोड़ डाला। पूरी बस के ऊंची-ऊंची लपटों में घिरे होने की परवाह किए बिना, उन्होने साथी यात्रियों के प्रति अपूर्व कर्तव्य बोध का परिचय दिया, खतरनाक आग के बावजूद बार-बार जलती हुई बस में जाते रहे और इस तरह उन्होंने कई जाने बचायी। उनके प्रयत्नों का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि इस दुर्घटना में उन्हें छोड़कर केवल दो यात्रियों की जाने गई। क्योंकि से० ले० गुप्ता अनेक यात्रियों को जलती हुई बस से बाहर निकालने में सफल हो सके थे।

से० ले० संजय गुप्ता ने स्वयं अपने जीवन के प्रति भारी खतरे के बावजूद अत्यधिक सूझबूझ साहस तथा मानव जीवन के प्रति अपनी चिंता का परिचय दिया तथा दो बच्चों तथा 6 से लेकर 10 अन्य यात्रियों के जीवन की रक्षा की। पर, इस युवा अधिकारी ने जलती हुई बस की लपटों में घिरकर स्वयं अपने प्राणो की आहुति दे दी।

गिरीश प्रधान
निदेशक

सं० 22-प्रेज/94—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "उत्तम जीवन रक्षा पदक" पुरस्कार प्रदान करने का अनुमोदन करते है :—

1. श्री रमेश कुमार (मरणोपरांत)
   मार्फत श्री सागर राम
   सुपुत्र श्री कृष्ण राम,
   तहसील फतेहाबाद, जिला हिसार,
   हरियाणा।

12-6-1992 को, गांव देहमान का रहने वाला 16-17 वर्षीय नवयुवक मोहिन्दर सिंह भूना जा रहा था। रास्ते में, उसे प्यास लगी तथा वह पानी पीने के लिए गांव बेजलपुर के निकट एक नहर के पास चला गया। परन्तु वह नहर में फिसल गया तथा डूबने लगा। श्री रमेश कुमार, जो वही पर था, लड़के को डूबते देख नहर मे कूद गया तथा उसने श्री मोहिन्दर सिंह को

जान बचा ली लेकिन इस प्रक्रिया में वह खुद नहर में डूब गया और अपनी जान दे बैठा ।

श्री रमेश कुमार ने लड़के के प्राण बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया परन्तु इस प्रक्रिया में स्वयं अपने प्राणों का बलिदान दे दिया ।

2. श्रीमती टी० लीला (मरणोपरांत)
मार्फत श्री के० ओ० पैली
कोरकल बीड़,
कुट्टमपुज, देवीकोलम तालुक,
जिला इडुक्की,
केरल ।

20-6-1992 को, भारी बरसात तथा तेज हवा के कारण यात्रियों को ले जा रही एक देशी नौका देवीकोलम तालुक के कुट्टमपुज गांव में "अनकायम" में दुर्घटनाग्रस्त होकर उलट गई। सभी यात्री 20 मीटर गहरी तथा 80 मीटर चौड़ी नदी में डूबने लगे । श्रीमती लीला जो इन यात्रियों में से एक थी, ने अपने जीवन के जोखम की परवाह न करते हुए पहले की तथा दो यात्रियों को डूबने से बचा लिया। एक तीसरे आदमी के जीवन को बचाने के अगले प्रयास में वह स्वयं नदी में डूब गई और अपने प्राण दे बैठी ।

इस प्रकार श्रीमती लीला ने डूबते हुए दो व्यक्तियों की प्राण रक्षा में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया तथा एक तीसरे व्यक्ति को बचाने के प्रयास में उन्होंने अपने प्राणों का बलिदान दे दिया ।

3. 6905605 हवलदार/क्लर्क विजय कुमार भारद्वाज,
(मरणोपरांत)
मार्फत श्रीमती शशि भारद्वाज,
गांव और डाकघर—जोरहाट,
तहसील—शिवसागर
जिला—शिवसागर, असम राज्य ।

16-3-1992 को सुबह लगभग 8.15 बजे हवलदार/क्लर्क विजय कुमार भारद्वाज ने अपने कार्यालय आते समय पटियाला रोड पर एक बहुत तेज गति से आते हुए 1 टन एन० एस० एन० ट्रक को देखा । श्री विजय कुमार भारद्वाज को लगा कि वाहन का चालक वाहन पर अपना नियंत्रण खो बैठा है । उसी क्षण श्री विजय कुमार ने सड़क के दूसरी ओर स्थित आर्मी स्कूल तथा सेन्ट्रल स्कूल जाने के लिए सड़क पार करते बच्चों के एक दल को भी देखा । अपना धैर्य तथा दिमागी सन्तुलन बरकरार रखते हुए वे बच्चों की ओर भागे तथा उन्हें सड़क के दूसरी ओर धकेल दिया । उन्होंने दो छोटे बच्चों को अपने दोनों हाथों में उठा लिया । किन्तु, उन बच्चों को बचाने की प्रक्रिया में उन्हें अत्यंत तीव्र गति से आते हुए ट्रक ने टक्कर मार दी । वे खून से लथपथ होकर सड़क पर गिर पड़े तथा बेहोश हो गए और बाद में उन्होंने दम तोड़ दिया ।

हवलदार/क्लर्क विजय कुमार भारद्वाज ने स्कूली बच्चों की जान बचाने में असाधारण पहल तत्परता तथा अदम्य साहस का परिचय दिया तथा इस प्रक्रिया में स्वयं अपने प्राणों का बलिदान कर दिया ।

गिरीश प्रधान
निदेशक

सं० 23-प्रेज/91—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "जीवन रक्षा पदक" पुरस्कार प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं —

1. मास्टर जी० चन्द्रशेखर,
पुत्र श्री जी० मल्लप्पा,
मकान नं० 12-78, बाबाजी नगर,
कोडांगल, जिला महबूब नगर,
आन्ध्र प्रदेश ।

28-2-1990 को घरेलू समस्याओं से दुखी कोडांगल की निवासी 60 वर्षीय श्रीमती हरिजन सोगुलम्मा ने जिला प्रजा परिषद (बालिक) हाई स्कूल, कोडांगल के समीप एक कुएं में डूब कर आत्महत्या का प्रयास किया । स्कूल के जिन छात्रों ने वृद्ध महिला को कुएं में डूबते हुए देखा उन्होंने तत्काल अपने अध्यापकों को सूचित किया । मास्टर जी० चन्द्रशेखर जिन्होंने अन्य छात्रों को इस घटना के बारे में अपने अध्यापकों को बताते सुना तत्काल कुएं की ओर दौड़ पड़े । अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना वह कुएं में कूद पड़े और वृद्ध महिला को बचा लिया ।

इस प्रकार से मास्टर जी० चन्द्रशेखर ने अपने प्राणों की परवाह किए बगैर डूबती हुई महिला की प्राण रक्षा में अदम्य साहस व तत्परता का परिचय दिया ।

2. श्री राज कुमार शर्मा,
संजय इलेक्ट्रानिक्स वर्क्स,
कटला रामलीला, हिसार
हरियाणा ।

5-11-91 को दीपावली के दिन श्री बाबू राम आहूती के मकान की पहली मंजिल में पटाखों से आग लग गई । परिवार के सभी बड़े सदस्य घर से बाहर भाग गए । तथापि चार वर्ष का एक बच्चा बाहर नहीं आ सका और जलते हुए मकान में फंस गया । बच्चे को बचाने के लिए मकान के अन्दर जाने का किसी ने भी साहस नहीं किया ।

श्री राज कुमार जो श्री बाबू राम के घर के निकट इलैक्ट्रानिक्स की दुकान चलाते हैं, ने साहस जुटाया और अपने प्राणों की परवाह न करते हुए जलते हुए मकान के भीतर घुस गये और बच्चे को सुरक्षित बाहर निकालने में सफल हो गए । बचाव की इस प्रक्रिया में वह जल गए ।

इस प्रकार से श्री राज कुमार शर्मा ने अपने जीवन के प्रति खतरे की परवाह न करते हुए एक छोटे से बच्चे को जलने

में बचाकर उसकी प्राण रक्षा में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

3. श्री तुलसी राम,
कान्स्टेबल नं० 225,
पुलिस स्टेशन, रामपुर
(बुशहर)/जिला शिमला,
हिमाचल प्रदेश।

26 अप्रैल 1992 की प्रातः को, जिला किन्नौर, तहसील व थाना कल्पा, गांव दूनी की कुमारी धर्म मासदे जो शिमला जिले में तहसील रामपुर आयी हुई थी, शौच के लिए दरिया सतलुज के किनारे गई और अपने हाथ मुंह धोते समय अकस्मात नदी में फिसल गई जो लगभग 50 मीटर चौड़ी व 13 मीटर गहरी थी। (पानी का प्रवाह भी बहुत तेज था) और सहायता के लिए चिल्लाई। उसकी चीख सुन कर लोग वहां इकट्ठा हो गये। स्थिति को भांपते हुए सिपाही तुलसी राम जो स्वयं भी वहां आ चुके थे तत्काल नदी में कूद पड़े और कुमारी मासदे के प्राण बचा लिए।

सिपाही तुलसी राम ने अपने जीवन के प्रति गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए डूबती हुई युवा बालिका की प्राण रक्षा में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

4. कुमारी गीता देवी,
पुत्री श्री मगशिरू,
गांव छिबबाड़ी (रोहेल),
डाक घर—खाना-थाना (रोहेल),
तहसील चिरगांव जिला शिमला,
हिमाचल प्रदेश।

3-9-1992 को छिबबाड़ी गांव का सजीव कुमार नामक लड़का गांव छिबबाड़ी (रोहेल) के निकट अचानक आंध्र नदी में गिर पड़ा। उसी गांव की निवासी कुमारी गीता देवी ने इस घटना को देखा और वह अपने प्राणों की परवाह किए बिना तुरन्त नदी में कूद पड़ी। बाढ़ से उमड़ती नदी का बहाव इतना तेज था कि गीता स्वयं भी उस तेज बहाव में बह गई परन्तु अन्ततः वह संजीव को बचाने में सफल हो गई।

कुमारी गीता ने अपने जीवन के प्रति गंभीर खतरे की परवाह किए बगैर डूबते हुए एक बालक की जान बचाने में सदाय साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

5. मास्टर मुजाहिल इब्राहीम द्राबू,
पुत्र श्री मोहम्मद इब्राहीम द्राबू,
6, शाह मंजिल करसु, राजबाग,
श्रीनगर-190008।

24-9-1992 को जब टाइन्डल बिस्को मेमोरियल स्कूल की तीसरी प्राइमरी के बच्चे स्कूल के तरणताल के किनारे खेल के पीरियड का इंतजार कर रहे थे तब मास्टर मदस्सर नामक 9 वर्षीय बालक को किसी दूसरे बालक ने धक्का दे कर तरण-ताल में गिरा दिया। मास्टर मदस्सर सहायता के लिए चिल्लाने लगा। उसकी चीख सुनकर एक साथी छात्र मास्टर मुजाहिल इब्राहीम द्राबू जिसने हाल ही में तैरना सीखा था, तरणताल में कूद गया और उस बालक को पानी से बाहर निकाल लिया तथा इस प्रकार स्वयं अपने प्राणों की परवाह किए बिना मदस्सर के अमूल्य जीवन की रक्षा की।

मास्टर द्राबू ने अपने जीवन के प्रति गंभीर खतरे की परवाह किए बगैर अपनी छोटी सी आयु के बावजूद डूबते हुए बालक को बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

6. श्री अब्बास,
पुत्र श्री गूपी,
ड्राई फिश मर्चेन्ट,
कसाबा बंगार,
मंगलौर।

7. श्री अब्दुल नजीर,
पुत्र श्री इस्माइल,
कसाबा बंगार,
मंगलौर।

8. श्री अब्दुल रजाक,
पुत्र श्री इदिनाबा,
कसाबा बंगार,
मंगलौर।

9. श्री गोपाल,
पुत्र श्री मारा,
एक्साइज गार्ड
सी स्क्वाड,
मंगलौर।

10. मास्टर मोहम्मद अनवर
पुत्र श्री मोइदीन कुन्ही,
10वीं कक्षा, बद्रिया हाई स्कूल,
मंगलौर।

11. श्री मोहम्मद मोनू,
पुत्र श्री सैयाद अली,
कसाबा—बंगार,
मंगलौर।

12. श्री मोहम्मद साली,
पुत्र श्री इब्राहीम,
कसाबा बंगार,
मंगलौर।

13. मास्टर नवशाद,
पुत्र श्री अब्दुल रहिमान,
कसाबा बंगार,
मंगलौर।

14. श्री रत्नाकर पुथरान,
पुत्र श्री कृष्णाप्पा अमीन,
टग ड्राइवर,
पोर्ट टाउन,
मंगलौर ।

15. श्री सदानन्द अमीन,
पुत्र श्री लिंगप्पा सुवर्गा,
कृष्णप्पा मार्ने, करनाल गार्डन,
कूड्रोली,
मंगलौर ।

15-6-1992 को सायं लगभग 4.45 बजे, 80 स्कूली बच्चों और 10 व्यक्तियों को ले जा रही एक यात्री नौका, जो मंगलौर से कमाबा बंगार जा रही थी, मंगलौर पुलिस स्टेशन सीमा क्षेत्र में डक्के के निकट गुरपुर नदी में उलट गई। परिणामस्वरूप नौका में सवार सभी स्कूली बच्चे और अन्य व्यक्ति गहरे पानी में गिर गये। इस घटना को देख कर सर्व/श्री अब्बास, अब्दुल नजीर, अब्दुल रजाक, गोपाल, मास्टर मोहम्मद अनवर, मोहम्मद मोनू, मोहम्मद सालीं, मास्टर नवशाद, रत्नाकर पुथरान, और सदानन्द अमीन अपनी जान की परवाह न करते हुए नदी में कूद पड़े और 68 स्कूली बच्चों सहित 78 व्यक्तियों को बचा लिया। इस दुर्घटना में 12 बच्चों की डूबने से मृत्यु हो गई।

सर्व/श्री अब्बास, अब्दुल नजीर, अब्दुल रजाक, गोपाल, मास्टर मोहम्मद अनवर, मोहम्मद मोनू, मोहम्मद सालीं, मास्टर नवशाद, रत्नाकर पुथरान और सदानन्द अमीन ने अपने प्राणों को खतरे की परवाह न करते हुए 78 व्यक्तियों की जान बचाने में अदम्य साहस व तत्परता का परिचय दिया।

16. श्री मैरी सुथन ई० एम,
मैरी सदानम, कैथाकोडी,
वेल्लीमोन डाकघर,
पेरीनाड ग्राम,
कोल्लम तालुक,
कोल्लम जिला,
केरल राज्य ।

7-4-1991 को प्रातः 10.30 बजे, छह यात्रियों सहित एक देशी नौका कान्हीराकोड नदी में उलट गई। इस घटना को देखकर श्री मैरी सुथन एक देशी नौका में स्थल की ओर दौड़ पड़े और 50 फुट गहरी नदी में कूद पड़े तथा उनमें से चार व्यक्तियों को मौत के मुंह से बचा लिया। श्री मैरी सुथन की यह कार्रवाई इसलिए और भी अधिक प्रशंसनीय है क्योंकि वह इस तथ्य से विचलित नहीं हुए कि 1981 में उनके एक भाई की पानी में डूबते हुए एक व्यक्ति की जान बचाने के ऐसे ही एक प्रयास में मृत्यु हो गई थी।

श्री मैरी सुथन ने अपने प्राणों के गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए डूबते हुए चार व्यक्तियों की प्राण रक्षा में अदम्य साहस व तत्परता का परिचय दिया।

17. श्री सी० मोहम्मद अली,
चालियाथोडी हाउस,
चेम्मानथाट्टा,
डाकघर थाचीनीलगनहडम,
पेरीनथलमन्ना,
केरल ।

21-6-1991 को सायंकाल 6.00 बजे 35 वर्षीय लक्ष्मी उर्फ थोकू और उसका 11 वर्षीय पुत्र मास्टर सुरेश नजदीक की नदी में नहाने के लिए गए। अनजाने में बच्चा फिसल कर नदी में गिर गया और डूबने लगा। अपने पुत्र को मौत से बचाने के लिए श्रीमती लक्ष्मी भी नदी में कूद पड़ी। लेकिन दुर्भाग्यवश वे भी डूबने लगी। उस समय 21 वर्षीय कालेज छात्र श्री मोहम्मद अली, स्नान के लिए नदी की ओर आ रहा था। अचानक उसने देखा कि दो व्यक्ति पानी में हाथ-पैर मार रहे हैं। बिना समय गवाएं वह नदी में कूद पड़ा और महिला तथा बच्चे को डूबने से बचा लिया। यह घटना उस समय हुई जब मानसून जोरों पर था और पानी की गहराई लगभग 6 मीटर थी। श्री मोहम्मद अली ने न केवल उन्हें पानी से बाहर निकाला बल्कि महिला और बच्चे को प्राथमिक सहायता दी और उन्हें उनके घर ले गए।

इस प्रकार श्री मोहम्मद अली ने अपने प्राणों को गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए डूबती हुई मां और बच्चे का जीवन बचाने में अदम्य साहस व तत्परता का परिचय दिया।

18 श्री मुरली,
पुलपाराम्बिल वीडू,
डाकघर मेडिकल कालेज,
ग्राम नल्लीकोड,
केरल ।

19. श्री रमेश,
पुलपाराम्बिल वीडू,
डाकघर मेडिकल कालेज,
ग्राम नल्लीकोड,
केरल ।

4-7-1991 को तीन चोरों ने एक स्कूल अध्यापक श्री देवासया के घर को लूटने का प्रयास किया। घर को लूटने के प्रयास में, उन्होंने श्री देवासया की पत्नी श्रीमती ग्लाडिस पर भी हमला किया। उसकी चीख पुकार सुनकर श्री मुरली तथा रमेश घटना स्थल पर पहुंचे और महिला की जान बचाई। चोर भाग गए। तथापि, श्री मुरली और श्री रमेश ने उनका पीछा किया और अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए चोरों को पकड़ लिया। इस कार्यवाही में, चोरों ने उन्हें छुरा घोंप दिया और उन्हें गंभीर चोटें आईं।

श्री मुरली और रमेश ने अपने प्राणों को खतरे की परवाह न करते हुए महिला की जान बचाने, चोरों को घेरने तथा पकड़ने में अदम्य साहस व तत्परता का परिचय दिया।

20. कुमारी मंजु चन्द्रन,
मुथेडाथू हाउस,
थोटामोन,
रन्नी, पत्थनमथिट्टा,
केरल राज्य।

2–3–1992 को प्रवीण और जोस मैरीदास नामक दो बालक थोटामोन रन्नी में पुम्पा नदी पर नहाने के लिए गए। संयोग से वे नदी के गहरे जल में गिर पड़े। स्नान घाट से उनके चिल्लाने की आवाज सुनकर आसपास के निवासी वहां पहुंच गये लेकिन किसी ने भी उन्हें बचाने का साहस नहीं किया। ऐसे में दसवीं कक्षा की चौदह वर्षीय विद्यार्थी कुमारी मंजु चन्द्रन, जो उनमें से एक थी, ने साहस किया और नदी में कूद पड़ी तथा डूबते हुए बालकों को सफलतापूर्वक बचा लिया तथा एक-एक करके उन्हें किनारे पर ले आई। दुर्घटना स्थल पर 8 फीट गहरा पानी था।

कुमारी मंजु चन्द्रन ने अपने प्राणों के प्रति खतरे की परवाह न करते हुए दो बालकों को डूबने से प्राण रक्षा करने में अदम्य साहस व तत्परता का परिचय दिया।

21. श्री ए० एल० एन्थनी,
पुत्र श्री मंजलीलोनप्पन, उर्फ कोचप्पन,
चेंगलूर गांव,
डाकखाना चेंगलूर,
तालुक मुकुन्दपुरम,
जिला त्रिशूर,
केरल।

22. श्री के० वी० अशोकन,
पुत्र श्री कूजप्पिली वेलायुधन,
गांव नेल्लायि,
डाकखाना–पेन्थालूर,
तालुक मुकुन्दपुर,
जिला–त्रिशूर
केरल।

11 मार्च, 1992 को अपराह्न 2.30 बजे सिलोन पेन्टिकोस्ट क्रिश्चियन समुदाय के 9 व्यक्ति नल्ली लिफ्ट इरिगेशन कराथु में एक देसी नौका से कारूमलि नदी को पार कर रहे थे। इन व्यक्तियों को यह पता नहीं था कि नदी पार करते समय देसी नौका में शान्ति से कैसे बैठा जाता है। चारों ओर पानी के विस्तृत फैलाव को देखकर वे भयभीत हो गये और नौका में हिलने डुलने लगे। इस प्रक्रिया में नौका का संतुलन बिगड़ गया और वह उलट गयी। नाविक सहित सभी नौ व्यक्ति पानी में जा गिरे और छटपटाने लगे। श्री अशोकन ने, जो घाट के पश्चिम की ओर नेल्लायि लिफ्ट इरिगेशन मोटर चला रहे थे, घटना स्थल से लगभग 50 मीटर की दूरी से चीखने–चिल्लाने की आवाज सुनी। क्योंकि नदी के उस ओर उसके पास कोई नौका नहीं थी, अतः वह तेजी से तैरकर दुर्घटना स्थल की ओर जाने लगे। उस समय तक एक अन्य व्यक्ति श्री ए० एल० एन्थनी भी जिन्होंने संघर्षरत लोगों की चीख पुकार सुनी, घटनास्थल पर पहले ही पहुंच चुके थे और उन्होंने दो महिलाओं को बचा लिया था, 50 फीट गहरे पानी में एक तीसरी महिला और स्वयं अपनी जान को बचाने के लिए संघर्ष कर रहे थे। इस मिले-जुले प्रयास में, श्री एन्थनी डूबती हुई तीन महिलाओं की जान बचाने में सफल हुए। श्री अशोकन ने भी तीन अन्य डूबते व्यक्तियों को बचा लिया और तीसरी महिला को बचाने में श्री एन्थनी के प्रयासों में भी सहायक बने। अंततोगत्वा इस घटना में 6 व्यक्तियों को बचा लिया गया और तीन को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

सवश्री ए० एल० एन्थनी और के० वी० अशोकन ने अपनी जान हथेली पर रखकर डूबने से 6 व्यक्तियों की जान को बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

23. श्री वधुवनिग्यिल रमेशन,
पुत्र श्री कुन्हिरमन मट्टूल
मट्टूल साउथ, डाकखाना–मट्टूल,
जिला कन्नूर, केरल।

13 जून, 1992 को मट्टूल गाव के मडक्करा में एक देशी नाव जिस पर 4 यात्री सवार थे, "थेक्कूम बट्टूकडावु" नामक नदी में उलट गयी। नदी में बाढ़ आयी हुई थी और पानी की धारा बहुत तेज थी। नाविक सहित 5 व्यक्ति नदी में जा गिरे। एक यात्री ने तैरकर किसी तरह अपने को बचा लिया। घटना स्थल किनारे से लगभग 10 मीटर दूर था और उस उस स्थान पर नदी की गहराई लगभग 12 फुट थी। एक मोटर-बोट "थवक्कल" के चालक श्री रमेशन को भी जो उस नदी में यात्रियों को ले जा रहे थे उस घटना को देखा। खतरे की गंभीरता को जानते हुए श्री रमेशन ने अपनी नाव को, उलट गई उस नाव की तरफ दौड़ाया। उसने डूब रहे व्यक्तियों की तरफ एक रस्सी फैंकी। उनमें से एक श्री शाहुल हमीद ने रस्सी को पकड़ लिया और उसको बचा लिया गया। अन्य यात्री पानी के बहाव के साथ बहते जा रहे थे। तब श्री रमेशन ने पानी में छलांग लगा दी और डूब रहे व्यक्तियों की तरफ तैरने लगे। उन्होंने श्री इब्राहिम और एलीमा को पकड़ लिया और अपनी नाव तक ले आये। किन्तु एक 14 वर्षीय लड़की सैफिया को बचाने में श्री रमेशन अपने प्रयास में सफल नहीं हो सके।

श्री वदुविलिग्यिल रमेशन ने अपनी जान को खतरे की परवाह न करके 3 व्यक्तियों को डूबने से जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

24. श्री वलियाकथ अब्दुल्मुन्नी शौकत अली,
वलियाकत हाउस कल्लुमकडवु सैकिन्ड वार्ड
ईडारुथी पंचायत डाकखाना–पीनूर,
त्रिचूर, केरल।

5 जुलाई 1992 को लगभग 3 बजे अपराह्न कल्लुमकडवु ईडातुरुथी तालुक कोडुंगल्लूर के निकट कनोली नहर

में पांच यात्रियों को ले जा रही एक देशी नाव उलट गयी। भारी वर्षा और ऊपर से होकर पानी बहने के कारण उस स्थान पर पानी की गहराई 8 मीटर हो गई थी। यात्रियों को तैरना नहीं आता था वे डूबने लगे थे। हालांकि नदी के किनारे पर भारी भीड़ इकट्ठी हो गयी थी परन्तु उनमें से कोई भी उन्हें बचाने के लिए आगे नहीं आया। श्री शौकत अली ने जो उसी समय वहां आए थे, नदी में छलांग लगा दी तथा एक-एक करके सभी 5 यात्रियों को बचा लिया।

श्री वी० ए० शौकत अली ने अपनी जान को खतरे की परवाह न करते हुए सभी 5 यात्रियों की जान बचाने में उच्च कोटि के साहस और तत्परता का परिचय दिया।

25. श्री जान लारेन्स,

तोप्पुट्टतिल वीडु नीनडकरा
जिला-कोल्लम केरल।

8-8-1992 को मछली पकड़ने वाली नौकायें जैसे ही समुद्र से लौट रही थी तो 10 नौकायें तूफानी समुद्र में डूब गयी और मछुआरे समुद्र में गिर गये। समुद्र के किनारे पर खड़े, लोग समुद्र में अन्य मछुआरे और नीनडकरा पत्तन के कर्मचारी डूबी हुई 10 नावों के मछुआरों के सम्मुख आये भयानक खतरे को असहाय होकर देख रहे थे। इस विषम स्थिति में श्री जान लारेन्स ने पहल की और "कन्नप्पन" नामक अपनी छोटी सी नौका में तूफानी समुद्र में चले गये तथा उन्होंने बहुमूल्य 21 जिन्दगियों को मौत के मुंह से छुड़ा लिया। इस प्रक्रिया में उनकी छोटी सी नौका काफी क्षतिग्रस्त हो गई थी।

श्री जान लारेन्स ने अपनी जान को गंभीर खतरे की परवाह किए बिना 21 व्यक्तियों को जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

26. मास्टर शराफुद्दीन पूतुकिडि,

पुत्र श्री इब्राहिम पुतुविडि हाउस,
अचनाम्बलम पी० ओ० कन्नमंगलम,
जिला-मल्लपुरम, केरल।

20 अगस्त, 1992 को स्कूल से लौटते समय 9वीं कक्षा के छात्र मास्टर शराफुद्दीन ने एक तालाब के पास कुछ भीड़ देखी। उसने देखा कि एक छोटा सा लड़का (9 वर्षीय) डूब रहा था। जब दूसरे लोग व्याकुलता से देख रहे थे, तब मास्टर शराफुद्दीन ने अपनी जान को खतरे की परवाह न करके तालाब में छलांग लगा दी और उस लड़के को बचा लिया जो तब तक बेहोश हो चुका था और उसकी हालत खराब थी। घटना स्थल पर पानी की गहराई 40 फुट थी।

2. मास्टर शराफुद्दीन ने अपनी जान को गंभीर खतरे की परवाह न करके डूबते हुए एक छोटे से लड़के की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

27. कुमारी वी० विजयश्री,

तुलल्तु वीडु, डाकखाना-कुमारमकारी,
कुट्टनाड, एलाप्पुझा, कोट्टयम।

14-6-1993 को लगभग 9.30 बजे एल० पी० स्कूल बाआपल्ली की दूसरी कक्षा की छात्रा कुमारी सविता स्कूल जाते समय फिसलकर कुटिमेरी फैरी-कुमारमकरी नहर में गिर गयी जहां नहर की गहराई लगभग 4 मीटर थी। वह नहर के तेज प्रभाव की चपेट में आ गयी और डूबने लगी। एक कालिज छात्रा कुमारी वी विजयश्री ने कालिज जाते समय रास्ते में इस घटना को देखा और बिना कोई समय गवाएं वह तत्काल नहर में कूद पड़ी और उस बच्ची को डूबने से बचा लिया। कुमारी विजयश्री की तत्कालिक और साहसी कार्रवाई में उस बच्ची को मौत के से बचा लिया।

इस प्रकार कुमारी विजयश्री ने अपनी जान को गंभीर जोखिम की परवाह न करते हुए एक छोटी बच्ची को डूबने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

28. श्री मुन्नी लाल

पुत्र श्री भैय्यादीन अहिरवार
रानी बाग तहसील लौधि
छतरपुर मध्य प्रदेश।

26 मार्च 1992 को लगभग सांय 6 बजे एक चार वर्ष का बच्चा मास्टर प्रकाश सोनी खेलते समय अचानक एक गहरे कुएं में जा गिरा उसकी तेरह वर्षीय बहन जो उस समय कुएं से पानी निकाल रही थी सहायता के लिए चीखी चिल्लायी। चीख-पुकार सुनकर पास बैठे श्री मुन्नीलाल दुर्घटना स्थल की ओर दौड़े आए और अपनी जान को जोखिम की परवाह किये बिना 40 फुट गहरे और तंग कुएं में कूद पड़े और बच्चे को डूबने से बचा लिया।

श्री मुन्नी लाल ने अपनी जान को गंभीर खतरे की परवाह किए बिना एक छोटे बच्चे को डूबने से बचाने में उच्च कोटि के साहस और तत्परता का परिचय दिया।

29. श्री पुष्पेन्द्र कुमार भारती,

मार्फत कंवर राजवीर सिंह (सेवानिवृत)
रेंजर कमरा नं० 16 ब्लाक-ए
प्रमोद वन चित्रकूट
जिला सतना मध्य प्रदेश।

16-7-1992 को सुरेन्द्रपाल विद्यालय चित्रकूट की प्रिंसिपल श्रीमती रंजना श्रीवास्तव "वृद्धा सेवा सदन" के नाम से ज्ञात चित्रकूट के प्रमोद वन क्वाटर नं० 26 ब्लाक-सी में खाना पका रही थी। अचानक गैस के सिलेन्डर में आग लग गई और श्रीमती रंजना सहायता के लिए चीखने-पुकारने लगी। सहायता के लिए उनकी चीख-पुकार सुनकर श्री पुष्पेन्द्र भारती जो वहां से गुजर रहे थे अपनी किशोरावस्था के बावजूद अपनी जान को खतरे की परवाह किए बिना क्योंकि जलता हुआ गैस सिलेन्डर किसी भी क्षण फट सकता था सहायता के लिए दौड़े आए। उन्होंने जलता हुआ गैस सिलेन्डर कमरे से बाहर निकाल फेंका। यदि वह ऐसा न करते तो जलता हुआ सिलेन्डर निश्चय ही फट गया होता जिसके कारण जान व माल की भारी क्षति हुई होती।

श्री पुष्पेन्द्र कुमार भारती ने जलने से एक महिला की जान बचाने में उच्च कोटि के साहस और तत्परता का परिचय दिया। यदि वे समय रहते हरकत में न आए होते तो जान व माल की भारी क्षति हुई होती।

30. श्री दिलीप,
पुत्र श्री बजनाथ
19, अहिल्या रोड गुर्जा मोहल्ला
सनवाड़ टाउन मध्य प्रदेश।

28-7-1993 को लगभग शाम 6.30 बजे मध्य प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम की एक बस एक पुलिया पार करते समय बाढ़ से उफनती बकूर नदी में गिर गई। श्री दिलीप ने देखा कि एक महिला उस विपत्तिग्रस्त बस से गिरकर नदी के तेज बहाव में बह रही थी और लगभग डूबने ही वाली थी। श्री दिलीप ने फौरन नदी में छलांग लगा दी और उस महिला को बचा लिया।

श्री दिलीप ने अपनी जान को खतरे की परवाह किए बिना उस महिला को डूबने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

31. श्री जयराम,
पुत्र श्री दुबलु कहार
34, राज मन्दिर गली
अहिल्या रोड
मध्य प्रदेश।

28-7-1993 को लगभग शाम 6.30 बजे मध्य प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम की एक बस एक पुलिया पार करते समय बाढ़ से उफनती बकूर नदी में गिर गई। एक महिला अपने बच्चे को बचाने के लिए जो नदी में डूब रहा था सहायता के लिए चीख पुकार कर रही थी। उसकी चीख पुकार सुनकर श्री जयराम नदी में कूद पड़े और बच्चे को बचा लिया। तत्पश्चात उन्होंने एक वृद्ध की भी जान बचायी जो नदी में गिर जाने से लगभग डूब रहा था। रबड़ की एक ट्यूब की सहायता से उन्होंने बाढ़ के कारण तेजी से बह रही नदी से चार अन्य व्यक्तियों की भी जान बचायी और उन्हें किनारे पर ले आए।

श्री जयराम ने अपनी जान को जोखिम की परवाह किए बिना छः व्यक्तियों के डूबने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

32. श्री नन्नू,
नगर पालिका कम्पाउंड
सनवाड़ टाऊन
मध्य प्रदेश।

28-7-1993 को लगभग शाम 6.30 बजे मध्य प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम की एक बस एक पुलिया पार करते समय बाढ़ से उफनती हुई बकूर नदी में गिर गई। यह देखकर श्री नन्नू ने तत्काल एक रस्सी की सहायता से विपत्तिग्रस्त बस के 8-10 यात्रियों को पानी से बाहर निकल आने में सहायता की। जब उन्होंने देखा कि कुछ यात्री नदी की तेज धारा में बहते जा रहे थे तो वह एक रबड़ की ट्यूब लेकर नदी में कूद पड़े और 4 व्यक्तियों को डूबने से बचा लिया।

श्री नन्नू ने अपनी जान को खतरे की परवाह किए बिना चार व्यक्तियों को डूबने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

33. श्री गोविन्द सहदेव मैनकर,
मुकाम मसुरा मरडे
तालुक-मालवान
जिला-सिंधुदुर्ग
महाराष्ट्र।

34. श्री जनार्दन बालकृष्ण मुंगेकर,
मुकाम मसुरा, तालुक मालवान
जिला-सिंधुदुर्ग
महाराष्ट्र।

35. श्री सुरेश बलिराम राणे,
मुकाम मसुरा मारडे, तालुक मालवान,
जिला सिंधुदुर्ग,
महाराष्ट्र।

36. श्री हुसैन सय्यद इब्राहिम,
मुकाम मसुरा, तालुक मालवान
जिला-सिंधुदुर्ग
महाराष्ट्र।

1-6-1992 को लगभग 16.30 बजे 7 व्यक्ति मसुरा क्रीक में एक देशी नाव में मसुरा से बांकीवाडा को जा रहे थे। लगभग 100 मीटर दूर जाने के पश्चात देशी नाव तेज हवा के कारण उलट गई और सातों व्यक्ति पानी में जा गिरे। जहां नाव उल्टी थी उस जगह पानी की गहराई 17 फुट थी। उनमें से एक यात्री उलटी हुई उस नाव के ऊपर गया और सहायता के लिए चीख पुकार करने लगा। चीख पुकार सुनकर सर्वश्री गोविन्द सहदेव मैनकर, जनार्दन बालकृष्ण मुंगेकर, सुरेश बलिराम राणे और हुसैन सय्यद इब्राहिम ने पानी में छलांग लगा दी और तैरकर उस जगह पहुंच गए। उन्होंने चार व्यक्तियों को जो तब तक बेहोश हो गए थे तब तक पानी के स्तर से ऊपर उठाए रखा जब तक फेरी नाव वहां नहीं पहुंच गई और इस प्रकार उन्हें बचा लिया। पांचवे व्यक्ति को भी जो उलटी हुई नाव पर चढ़ने में सफल हो गया था, इन चार व्यक्तियों ने बचा लिया। सात व्यक्तियों के ग्रुप में से दो व्यक्ति डूब गए।

सर्वश्री गोविन्द सहदेव मैनकर, जनार्दन बालकृष्ण मुंगेकर, सुरेश बलिराम राणे और हुसैन सय्यद इब्राहिम ने अपनी जान को खतरे की परवाह किए बिना पांच लोगों को डूबने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

37. मास्टर अभिजीत प्रमोदराव देशमुख,
नवी बस्ती, वार्ड नं० 76
बडनेरा, जिला अमरावती,
महाराष्ट्र।

26-2-1993 को महानगर पालिका स्कूल नं० 23, बडनेरा, का एक छः वर्षीय छात्र मास्टर रहीम खेलते हुए पानी से भरे एक 5 फुट गहरे भूमिगत टैंक में गिर गया और उसमें डूबने लगा। उसी स्कूल के तीसरी कक्षा का एक विकलांग छात्र मास्टर अभिजीत भी पास में ही खेल रहा था और उसे पानी के बाहर मास्टर रहीम के हाथ दिखे। वह तुरंत हरकत में आ गया और उसने मास्टर रहीम के एक हाथ को पकड़ लिया और सहायता के लिए चिल्लाया। अन्य छात्र जो वहां आस पास थे उसकी सहायता को दौड़े और उन्होंने लड़के को टैंक से बाहर खींचने में उसकी मदद की।

मास्टर अभिजीत प्रभोदराव देशमुख ने अपनी स्वयं की विकलांगता के बावजूद, अपने प्राणों के प्रति जोखिम की परवाह किए बिना एक लड़के की जान बचाने में तत्परता, साहस और मानवता के प्रति लगाव का परिचय दिया।

38. मास्टर डेविड (नेटगोनेक) गंगटे,
पुत्र श्री एम० एन० गंगटे,
न्यू लम्बुलेन
इम्फाल, मणिपुर।

18-2-1993 को बरसात के दिन लगभग 2.00 बजे अपराह्न ढाई वर्षीय बच्चा हाटखोलाम, जो लगभग 5/6 फुट गहरे एक कुएं के पास खेल रहा था, दुर्घटना वश फिसल गया और कुंए में जा गिरा। यह देख कर मास्टर डेविड जो कुए के पास से गुजर ही रहा था, अपनी जान की परवाह किए बिना फुर्ती से कुएं में कूद पड़ा। उसने डूबते हुए बच्चे का हाथ पकड़ कर उसे कुंए से बाहर खींच लिया और इस प्रकार उसकी जान बचाई। मास्टर डेविड तैरना नहीं जानता था लेकिन एक इंसान की जान बचाने की अदम्य चाह ने उसे अपनी सुरक्षा की परवाह किए बगैर हरकत में आने को प्रेरित किया।

अपनी अल्पायु में ही मास्टर डेविड ने अपनी जान के प्रति खतरे की परवाह किए बिना एक छोटे बच्चे की डूबने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

39. श्री जोनुनखुमा,
एस० हलिमेन, आइजौल,
मिजोरम।

एस० हिलमेन गांव में कुछ पत्थर की खदानें हैं। बिहार के धुमका जिले से आए कुछ मजदूर और कुछ स्थानीय लोग इन खदानों में काम करते हैं और वे खदानों के नीचे पी० डब्ल्यू० डी० की सड़क के किनारे रहते हैं। 9-8-1992 को लगभग प्रातः 3.40 बजे जब सभी लोग सोये हुए थे, खदानों की पहाड़ी ढलानों से एक भारी भू-स्खलन हुआ। खदानों से पत्थरों के गिरने की असामान्य आवाज सुनकर श्री जोनुनखुमा जाग गए। संभावित खतरे को भांपते हुए उन्होंने तत्काल अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना गिरते हुए पत्थरों के बीच इधर-उधर भागते हुए शोर मचाया। लगभग 10 मिनट के भीतर ही वे कुछ लच्चों को छोड़कर सुरक्षित स्थान पर ले जा सके और कुल मिलाकर 16 व्यक्तियों की ही जान बचा सके थे कि भारी विपत्ती ने आ घेरा जिसमें वे स्वयं ही बड़ी मुश्किल से बच सके। इस विनाश लीला में 66 व्यक्ति मारे गए।

श्री जोनुनखुमा ने अपनी जान के प्रति जोखिम की परवाह किए बिना एक भयंकर और विनाशकारी भू-पाषाण स्खलन के बीच 16 व्यक्तियों का जीवन बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

40. मास्टर लालनुनपुइया,
पुत्र श्री चालखुमा
हनाहथियाल लुंगले जिला
मिजोरम।

3-4-1993 को लगभग 40 अवयस्क लड़के और लड़किया जंगल से पत्तियां बटोरने पास के जंगल में गए। पत्तियां इकट्ठा करने के बाद कुछ लडके स्नान के लिए मैट नदी को गए। नहाते हुए, दुर्भाग्यवश चार लडके जो तैरना नहीं जानते थे, दुर्घटनावश नदी के तेज बहाव में फंस गए और उनके जान जाने का खतरा आन पड़ा था। मास्टर लालनुनपुइया और उसके दो मित्रों बनलामुआना और लालनुसंगा ने देखा कि उनका एक दोस्त, जे० लालरेमुराता डूब रहा है और नदी के तेज बहाव में बह रहा है। अपने मित्र पर यह संकट देखकर, वे तुरंत नदी में कूद पड़े और मिलकर उसे किनारे तक खींच लाए। इस प्रकार मास्टर लालनुनपुइया और उनके दो मित्रों ने मिलकर जे० लालरेमुराता को एक निश्चित मौत के मुह से उबार लिया।

मास्टर लालनुनपुइया ने अपने दो मित्रों सहित अपने मित्र को डूबने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

41. मास्टर लालनुनसांगा,
पुत्र श्री थाटलिवाना, हनाहथियाल,
लुंगले जिला,
मिजोरम।

3-4-1993 को लगभग 40 अवयस्क लड़के और लड़कियां जंगल से पत्तियां बटोरने पास के जंगल में गए। पत्तियां इकट्ठा करने के बाद कुछ लड़के स्नान के लिए मैट नदी को गए। नहाते हुए, दुर्भाग्यवश चार लड़के जो तैरना नहीं जानते थे, दुर्घटनावश नदी के तेज बहाव मे फंस गए और उनकी जान को खतरा आन पड़ा था। मास्टर लालनुनसंगा और उसके दो मित्र जे० बनलामुआना और लालनुनपुइया ने देखा कि उनका एक दोस्त जे० लालरेमुराटा डूब रहा है और नदी के तेज बहाव मे बह रहा है। अपने मित्र पर यह संकट देखकर वे तुरन्त नदी में कूद पड़े और मिलकर डूबते हुए लालरेमुराटा को किनारे तक खींच लाए। इस प्रकार उन्होंने अपनी जान की कीमत पर लालरेमुराटा का जीवन एक निश्चित मौत के मुह से उभार लिया।

मास्टर लालनुनसांगा ने अपने दो मित्रों सहित अपने मित्र को डूबने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

42. मास्टर जे० वनलालमुआना,
पुत्र श्री जे० लालनुमविया,
हनाहथियाल, लुगने जिला,
मिजोरम।

3-4-1993 को लगभग 10 बजे पूर्वाह्न लगभग 40 अवयस्क लड़के और लड़कियां जंगल से पत्तियां बटोरने पास के जंगल में गए। पत्तियां इकट्ठा करने के बाद कुछ लड़के स्नान के लिए मेट नदी को गए। दुर्भाग्यवश, चार लड़के जो तैरना नहीं जानते थे, दुर्घटना वश नदी के तेज बहाव में फंस गए और उनकी जान का खतरा आन पड़ा था। मास्टर जे० वनलालमुआना जिसने पहले अन्य साथियों की मदद से अपने दो मित्रों को बचाने में अहम भूमिका निभाई थी, को वह जगह दिखाई गई जहां एक अन्य लड़का जोजफ लालहरूआइतलुआगा के डूब चुके होने की आशंका थी। जे० वनलालमुआना तुरंत नदी में कूद पड़ा और उसे नदी की तलहटी पर पाया। वह उसे किनारे तक खींच लाया और इस समय तक लालहरूआइतलुआगा पहले ही बेहोशी की हालत में पहुंच चुके थे। जे० वनलालमुआना ने उसे अपने मुंह से कृत्रिम सांस देना शुरू किया जिसकी तकनीक वह स्कूल में सीख चुके थे। यह उपाय कामयाब रहा और लड़के को होश आने लगा और धीरे-धीरे उसकी हालत सुधरने लगी।

मास्टर जे० वनलालमुआना ने डूबने से एक लड़के की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया और अपने दो मित्रों के साथ मिलकर अन्य दो लड़कों की जान बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

43. मास्टर वनलालथलेंगा,
पुत्र श्री सांघलेइया,
हनाहथियाल, लुगने जिला,
मिजोरम।

3-4-1993 को लगभग 10 बजे पूर्वाह्न लगभग 40 अवयस्क लड़के और लड़कियां समीप के जंगल में पत्तियां बटोरने गए। पत्तियां बटोर चुकने के बाद कुछ लड़के मैट नदी में स्नान करने गए। नहाते वक्त, दुर्भाग्यवश ग्रुप के चार लड़के जो तैरना नहीं जानते थे, दुर्घटनावश नदी के तेज बहाव में फंस गए। मास्टर वनलालथलेंगा अपने एक मित्र पी० सी० ललथिंगलोवा को डूबते हुए और उसकी जान को खतरे में देखकर तत्काल नदी में कूद पड़ा और उसे नदी से बाहर खींच लाया और इस प्रकार उसे डूबने से बचा लिया। उसने इसी वारदात में अपने मित्र जे० वनलालमुआना के साथ एक अन्य साथी की जान बचाने में भी निर्णायक भूमिका निभाई।

मास्टर वनलालथलेंगा ने अपने एक साथी को डूबने से बचाने में और मास्टर वनलालमुआना के साथ मिलकर एक अन्य साथी को डूबने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

44. मास्टर गोपाल पुटेल,
पुत्र श्री दीनाबन्धु पुटेल,
निवासी कोटसिरा, पो० ओ० थाना ताखा,
जिला बोलनगिर उड़ीसा।

25-11-1991 को लगभग 9 बजे प्रातः एक आठ वर्षीय लड़का गोपाल पुटेल अपनी छोटी बहन 2 वर्षीय गंधारी पुटैल को अपनी गोद में लिए हुए था और फल तोड़ रहा था। फूल तोड़ते हुए, वे दोनों एक कुएं में गिर पड़े जिसमें 15 फीट गहरा पानी था। जमीन की सतह पानी की सतह से लगभग 12 फीट ऊंची थी। कुएं में गिरने पर गोपाल पुटेल ने एक हाथ से अपनी बहन को पानी के ऊपर थामे रखा और दूसरे हाथ से अपनी बहन और अपने आपको डूबने से बचाने के लिए तैरने लगा। चम्पू पटेल नामक एक महिला ने दोनों बच्चों को कुएं में पड़े देखा और शोर मचाने लगी। शोर सुनकर, पबनुब पटेल और मानमोरा पटेल अपने घरों से घटनास्थल को दौड़े और गोपाल और गंधारी दोनों को बचा लिया।

मास्टर गोपाल पुटेल ने सहायता के लिए लोगों के पहुंचने तक अपने आपको और अपनी बहन को पानी में डूबने से बचाए रखने और इस प्रकार अपनी बहन और स्वयं की जिन्दगी बचाने में अनुकरणीय साहस और सूझ-बूझ का परिचय दिया।

45. मास्टर रतन कर्ण उर्फ मोंट्टू,
पुत्र श्री सुदर्शन कर्ण,
पो० ओ० कदलीगढ़ थाना राइराखोल
जिला सम्बलपुर, उड़ीसा।

21-7-1993 को लगभग 1.30 बजे अपराह्न एक देशी नाव जिसमें 26 यात्री सवार थे, महानदी को कैकाटा की तरफ से बोध घाट की तरफ पार कर रही थी। जब नाव नदी के बीचों बीच ही पहुंची थी कि वह तेज झंझावती हवा और बारिश में फंस गई और उलट गई। आठ वर्षीय स्कूली छात्र रतन कर्ण ने जो उसी नाव में था, अपनी माता और दो अन्य महिलाओं को उनके बाल पकड़ कर और उनके सहारे के लिए उन्हें लकड़ी का लट्ठा उपलब्ध करा कर उनकी जान बचाई।

मास्टर रतन कर्ण ने अपने जीवन के प्रति खतरे की परवाह किए बिना तीन महिलाओं को डूबने से बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

46. श्री दिनेश कुमार, (मरणोपरांत)
पुत्र श्री रतन लाल कलाल,
ग्राम व तहसील देवगढ़,
जिला उदयपुर
राजस्थान।

11-8-1992 को जालौर जिले के चन्दगई ग्राम में भारी वर्षा के कारण, एक नाला उफन रहा था। तीन व्यक्ति बाढ़ग्रस्त नाले में फंस गए थे। श्री दिनेश कुमार ने अपनी जान की परवाह किए बिना पहल की और दो डूबते हुए व्यक्तियों की जान बचाने में सफल रहा। तीसरे डूब रहे व्यक्ति की जान बचाने के प्रयास में वह स्वयं एक कंटीली झाड़ी में फंस गया और इस प्रकार उसने अपनी जान गवां दी।

श्री दिनेश कुमार ने दो व्यक्तियों को डूबने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया और फंसे हुए

तीसरे व्यक्ति को बचाते हुए वह अपने प्राणों से हाथ धो बैठा।

47. मास्टर प्रवीन कुमार,
पुत्र श्री नारायण लाल पटेल,
निवासी पोस्ट डमरी, तहसील व जिला डूंगरपुर,
राजस्थान

8-2-1993 को एक आठ वर्षीय लड़की कुमारी लता खेलते हुए पानी पीने के लिए एक कुए पर गई लेकिन वह फिसल पड़ी और कुए में गिर गई। कुआ 28 फीट गहरा था। मास्टर प्रवीन कुमार, जो समीप ही थे, यह देखकर घटनास्थल की ओर दौड़े। वह तुरत कुए में कूद पड़े और लड़की को बचा लिया। उसकी इस सामयिक बचाव की कार्रवाई से ही लड़की का जीवन बचाया जा सका।

मास्टर प्रवीन कुमार ने अपने जीवन के प्रति खतरे की परवाह किए बिना एक आठ वर्षीय बच्ची की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

48. कु० कंवर देवी,
हरिपुरकला, जनपद देहरादून,
उत्तर प्रदेश

11/12 नवम्बर, 1992 की मध्यरात्रि में एक जंगली हाथी ने श्री अमर सिंह की झोंपड़ी पर हमला किया और उसकी चार वर्षीय बच्ची को वहीं पर मार डाला। इस समय श्री अमर सिंह की 11 वर्षीय लड़की कुमारी कंवर देवी अपनी दो अन्य बहिनों और एक भाई को दुर्घटना स्थल से हटाकर एक सुरक्षित स्थान पर ले गई जहां उनके साथ उसने स्वयं भी शरण ली। केवल अपने साहस, सूझबूझ और सामयिक कार्रवाई की वजह से ही कंवर देवी तीन बच्चों और स्वयं को जंगली और रौद्र हाथी के आक्रमण से बचा पाई।

इस प्रकार कुमारी कंवर देवी ने अपनी जान की परवाह किए बिना एक हिंसक हाथी से तीन बच्चों और स्वयं को जान बचाने में अदम्य साहस और सूझबूझ का परिचय दिया।

49. मास्टर तुषार क्षेत्रपाल उर्फ हनी
112/317, स्वरूप नगर,
कानपुर

मास्टर तुषार क्षेत्रपाल बलरामपुर, जिला कानपुर में अपने दादा के घर गया था। 5-6-1991 को लगभग 2.30 बजे मध्य रात्रि को जब श्री क्षेत्रपाल के दादा श्री रतन लाल गुलाटी और परिवारजन सोए हुए थे तो चार चोर घर को छत के रास्ते घर में घुसे। श्री रतन लाल एक कमरे में सो रहे थे। जब उन्होंने दरवाजा खुलने की आवाज सुनी तो वे जाग गये। जब उन्होंने चारों चोरों को देखा तो उनमें से एक को पकड़ लिया और सहायता के लिए चिल्लाने लगे। मदद के लिए उनकी चीख सुनकर श्री दिनेश खुराना, मास्टर तुषार क्षेत्रपाल और घर की दो महिलाएं कमरे की ओर दौड़ी आईं और उन्होंने भी चोरों को पकड़ने का प्रयास किया लेकिन चोरों ने उन पर चाकुओं से हमला कर दिया जिससे वे सभी घायल हो गए। मास्टर तुषार की मां को गंभीर चोटें आईं और बाद में अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गई। मास्टर तुषार भी हालांकि गंभीर रूप से घायल हो गया था, तो भी उसने चोर को अपनी गिरफ्त से निकलने नहीं दिया। और बाद में उसे पुलिस के हवाले कर दिया। यदि मास्टर क्षेत्रपाल ने बहादुरी का परिचय न दिया होता तो अन्य तीन व्यक्तियों की जान खतरे में पड़ गई होती।

मास्टर तुषार क्षेत्रपाल ने चोरों का मुकाबला करने में अदम्य साहस का परिचय दिया।

50. मास्टर आदुसुमिल्ली श्री साई सतीश,
पुत्र श्री आदुसुमिल्ली शेषागिरि राव,
51, माल रोड मेरठ-250001,
उत्तर प्रदेश

25 जून, 1993 को लगभग 5.30 बजे सायं ले० श्री० एस० गिल, जो एक ग्रुप के साथ घुड़सवारी करते हुए घूम रहे थे, 15 से 20 फीट गहरे एक तालाब में जा गिरे क्योंकि जिस घोड़े पर वह सवार थे वह बिदक गया और उन्हें दूर पटक दिया। गिल तैरना नहीं जानते थे अतः वे डूबने लगे। यह देखकर, 15 वर्षीय मास्टर आदुसुमिल्ली श्री साई सतीश जो पास ही में घुड़सवारी कर रहा था, हालांकि अपने चुस्त ब्रीचेज और लंबे राइडिंग बूटों के कारण उसे दिक्कत हो सकती थी, बिना समय गंवाए अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना तालाब में कूद पड़ा और गिल की तरफ तैरने लगा ब्रीचेज और बूटों के कारण, जो वह पहने हुए था, उसे तैरने में काफी कठिनाई हुई। इन सब दिक्कतों के बावजूद, सतीश ने अपनी सुध-बुध और संकल्प नहीं छोड़ा और एक हाथ से मजबूती से गिल को पकड़े हुए किनारे की तरफ बढ़ता रहा, हालांकि वह पूरी तरह थक चुका था। अत्यधिक संघर्ष के बाद वह श्री गिल को सुरक्षित बाहर खींच लाया।

इस प्रकार मास्टर आदुसुमिल्ली ने अपनी जान की परवाह किए बिना एक व्यक्ति की जान डूबने से बचाने में उच्च कोटि के साहस और तत्परता का परिचय दिया।

51. श्री स्नेहाशीष दत्ता, (मरणोपरांत)
पुत्र श्री उमित रू दत्ता,
जनरल सरानी, हाकिमपाड़ा, सिलीगुड़ी-374401,
जिला दार्जिलिंग (प० बंगाल)।

उत्तर बंगाल एक्सप्लोरर्स क्लब ने 25-12-1992 से 29-12-92 के दौरान दार्जिलिंग जिले की तीस्ता और रंगीत नदियों के संगम स्थल बेनी पर अपना वार्षिक कैम्प लगाया।

29-12-1992 को श्री दरबार घोष के नेतृत्व में उक्त क्लब के तीन अनुदेशकों द्वारा रंगीत नदी पर नदी पार करने के अभ्यास का प्रबंध किया गया। दुर्भाग्यवश, श्री दरबार घोष रस्सी से उलझ गये और अपना संतुलन खो बैठे तथा नदी में गिर गये और नदी के 2.39 मीटर प्रति सेकेंड के तेज प्रवाह में बह गये। श्री स्नेहाशीष दत्ता, जिन्हें कैम्प गार्ड की ड्यूटी

सौंपी गई थी और जो बच्चा के साथ नदी किनारे बैठे हुए थे, ने स्थिति की गंभीरता को समझा और मानवीय भावनाओं से प्रेरित होकर श्री दरबार घोष को जान बचाने के लिए तैरना न जानते हुए भी नदी में कूद पड़े। उनके इस वीरोचित प्रयास में श्री घोष फिर से संभल गये लेकिन श्री स्नेहाशीष दत्ता रस्सी पकड़े हुए नहीं रह सके और तेज प्रवाह में बहकर डूब गए।

श्री स्नेहाशीष दत्ता ने श्री घोष की जान बचाने के प्रयास में अदम्य साहस और कर्तव्य निष्ठा का परिचय दिया और इस प्रक्रिया में अपना जीवन बलिदान कर दिया।

52. श्री नरेन्द्र सिंह पवार,
क्वार्टर सं. 793, सैक्टर-8,
आर. के. पुरम,
नई दिल्ली।

23-5-1990 को आर. के. पुरम, नई दिल्ली के सैक्टर-8 में स्थित क्वार्टर सं. 791 में आग लग गई। क्वार्टर में मौजूद एक अकेली लड़की ने सहायता के लिए इधर-उधर पुकारा। तथापि, किसी ने भी आग को नियंत्रित करने/बुझाने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया जबकि आग के समीपवर्ती आवासों में फैलने का डर था। क्वार्टर नं. 793 में रह रहे नरेन्द्रसिंह पवार ने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना मेन स्विच बंद किया और घर के कीमती सामान को हटाया तथा लड़की को बचा लिया। इस प्रकार उन्होंने भीषण अग्निकाण्ड होने से रोक लिया जो अत्यधिक विनाशकारी साबित हो सकता था।

श्री नरेन्द्र सिंह पवार ने अपनी जान को खतरे की परवाह किए बिना बच्ची की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

53. श्री हरिन्द्र पाल,
क्वार्टर नं. 503, सैक्टर-8,
आर. के. पुरम,
नई दिल्ली।

27-12-1991 को आर. के. पुरम, सैक्टर-8 में स्थित क्वार्टर सं. 508 में भीषण आग लग गई। क्वार्टर से निकलते धूएं को देखकर और क्वार्टर के अन्दर फंसी हुई महिलाओं की चीख सुनकर श्री हरिन्द्र पाल जलते हुए घर की ओर भागे और अपना जीवन को अत्यधिक खतरे में डालकर उन्होंने बहुत बड़े विनाश को होने से रोक लिया और दो असहाय महिलाओं की जान बचा ली।

श्री हरिन्द्र पाल ने अपने जीवन को खतरे की परवाह किए बिना दो महिलाओं को जलने से बचाकर अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

54. कैप्टेन रोजरी जोसफ पल्डानो,
210, पथीराकाली अम्मनकोइल स्ट्रीट,
तूतिकोरन-628002,
तमिलनाडु।

6-11-90 को 12 मछुआरों को लेकर "कैम" नामक एक नाव मछली पकड़ने के लिए मिनिकाय से रवाना हुई लेकिन इंजिन की खराबी के कारण यह द्वीप पर नहीं लौट सकी। तेज प्रवाह और प्रतिकूल हवा के कारण मछुआरों के लिए पाल का इस्तेमाल करना असंभव हो गया। बन्दरगाह प्राधिकारियों से लापता नौका के लिए बचाव कार्य शुरु करने के निर्देश मिलने पर कैप्टन रोजरी जोसफ पल्डानो ने "एम. वी. अमीनदावी" की कमान संभालते हुए 9 नवम्बर, 1990 को दोपहर 2.00 बजे बचाव कार्य शुरू किया। यद्यपि समुद्र अत्यधिक अशांत था, उन्होंने न केवल अपने जहाज को अपितु अपने जीवन को भी गंभीर खतरे में डालकर खोज अभियान चलाया। तेज हवा और तेज प्रवाह विशेष रूप से नवें डिग्री चैनल में, जो तेज प्रवाह और "एम. वी. अमीनदीवी" जैसा जहाज चलाने हेतु नौचालकों के लिए अत्यधिक दुर्गम क्षेत्र के रूप में माना जाता है, के बावजूद कैप्टन आर. जे. पल्डानो ने अपना अभियान जारी रखा। अशांत समुद्र में फंसे हुए मछुआरों को बचाने में उन्होंने जिस दक्षता और कौशल का परिचय दिया उसी के बल पर उन्होंने 10 नवम्बर, 1990 की सुबह नाव का पता लगा लिया। मछुआरों को तुरन्त प्राथमिक चिकित्सा दी गई और भोजन व पानी दिया गया तथा सुरक्षित मिनीकाय वापिस लाया गया।

इस प्रकार कैप्टन आर. जे. पल्डानो ने न केवल 12 मछुआरों की जान बचाई अपितु लगभग 12 लाख रुपये की कीमती नाव को भी सुरक्षित ले आए। यह केवल कैप्टन पल्डानो के कुशल प्रयत्न और कर्तव्यनिष्ठा का ही परिणाम था कि ऐसा असंभव कार्य संभव हो पाया।

55. मेजर किरण कुमार डंगवाल (आई. सी.-30339)
इंजीनियर्स, गैरीसन इंजीनियर (पूर्व),
लखनऊ।

मेजर किरन कुमार डंगवाल नैनीताल में छुट्टियों पर थे। 23-3-1991 को रात्रि को करीब 10 बजे जब वह झील की तरफ से घर वापिस आ रहे थे, उन्होंने झील में दो नावों को टकराते हुए और लोगों को सहायता के लिए पुकारते सुना। एक क्षण की देरी किए बिना वह तुरन्त पानी में कूद पड़े और उलटी हुई नाव तक पहुंच कर अकेले तीन लोगों की जान बचायी और उलटी हुई नाव सहित तीनों लोगों को सुरक्षित किनारे पर ले आए। इस सारे अभियान के दौरान, श्री डंगवाल उन्हें किनारे की तरफ लाते हुए सांत्वना दिलाते रहे और हिदायतें देते रहे।

मेजर डंगवाल ने अपने जीवन को जोखिम में डालते हुए तीन नागरिकों का जीवन बचाकर अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

56. 14702105 सिपाही दिनेश प्रसाद,
1, एन. ए. जी. ए.,
मार्फत 56 ए. पी. ओ.

सिपाही दिनेश प्रसाद, उत्तर काशी जिले के ग्राम जंथूरू स्थित अपने घर में वार्षिक छुट्टी पर थे। 20-10-1991 को जब वह अपने घर में सो रहे थे, तब तड़के 3.00 बजे इस क्षेत्र में भूकंप का भारी झटका आया। इस गहरे कम्पन से वह जाग गए। एक क्षण को तो वह हतप्रभ से रह गए। तथापि, उन्होंने समझदारी से काम लिया और उसी कमरे में सो रहे अपने कजन को लेकर घर से बाहर की ओर दौड़े। जैसे ही वे घर से बाहर आये, उसी क्षण सारा मकान गिर गया। तब वह पड़ोस के घर गए और एक छोटे से छेद से उन्होंने रात के गहन अन्धकार में मलबे से होकर गिरे हुए घर में प्रवेश किया और इस धीरे-धीरे अत्याधिक मेहनत से उन्होंने घर के लोगों को बचा लिया। तत्पश्चात् वह पास में स्थित दिदसारी ग्राम गये और अपना बचाव कार्य जारी रखा। जहां कहीं भी उन्हें किसी के जीवित रहने का जरा सा भी आभास मिलता या अन्दर से किसी के चिल्लाने कराहने की आवाज सुनाई दी, उन्होंने मलबा हटाया, स्वयं अन्दर जाने का रास्ता बनाया और अत्याधिक सावधानी से घायलों को बाहर लाए और उन परिस्थितियों में जो भी प्राथमिक उपचार दिया जा सकता था, उन्हें दिया। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह नहीं की और अपना कर्तव्य समझकर कार्य करते रहे। उन्होंने कम से कम 50 व्यक्तियों के जीवन को बचाया जो अन्यथा दब कर मर गए होते।

सिपाही दिनेश प्रसाद ने व्यक्तिगत अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए और अपने कर्तव्य से भी आगे बढ़कर अनेक व्यक्तियों की जान बचाने में उच्च कोटि के अदम्य साहस, तत्परता और निःस्वार्थ कर्तव्य परायणता का परिचय दिया।

57. 2870126 लांस हवलदार राजाराम,
17वीं राजपूताना राइफल्स (सवाईमान),
मार्फत 99 ए० पी० ओ०।

लांस हवलदार राजाराम फरवरी, 1992 में राजपूताना राइफल्स की 17वीं बटालियन (सवाईमान) की यूनिट जो अति ऊंचाई वाले क्षेत्र में स्थित थी, में कार्य कर रहे थे। 9-2-1992 को उन्हें ट्रांजिट बस के लिए गार्ड कमांडर के रूप में नियुक्त किया। 15.30 बजे गगटोक से 236 ट्रांजिट कैम्प (कयांगनोसला) लौटते हुए माइल स्टोन 15 क्षेत्र में ट्रांजिट बस रुकी, क्योंकि आगे की सड़क बर्फ की चट्टान खिसकने से अवरुद्ध हो गयी थी। ट्रांजिट बस के आगे जा रही एक अन्य वन टन वाहन भी सड़क अवरुद्ध हो जाने के कारण फंस गया था। लेफ्टि० कर्नल ए० डी० थोम्ब्रे, जो 236 ट्रांजिट कैम्प के कमान अफसर थे, उसी वन टन वाहन में अपने पुत्र और साले के साथ सफर कर रहे थे। उन्होंने अवरुद्ध सड़क क्षेत्र को पैदल पार करके कयांगनोसला की तरफ बढ़ने का निश्चय किया। ज्योंही वह अपने पुत्र के साथ अवरुद्ध सड़क क्षेत्र को पार कर रहे थे, लेफ्टि० कर्नल ए० डी० थोम्ब्रे अचानक बड़े हिम स्खलन की चपेट में आ गए। लांस हवलदार ने फौरन ही एक सिविलियन ट्रक से एक रस्सा लिया और उनके बचाव के लिए रस्से से पहाड़ी के नीचे उतरने का निश्चय किया। वह पहाड़ी की खड़ी ऊंचाई से नीचे की तरफ फिसलते चले गए। रस्सा केवल 120 मीटर तक जा सका। अपनी जान को खतरे में डालते हुए वे बर्फ से ढकी पहाड़ी के खड़े ढलान पर और 130 मीटर फिसलते हुए नीचे आए और नाले तक पहुंचे। अलौकिक प्रयास से और गभीर दिक्कतों के बावजूद वह लेफ्टि० कर्नल ए० डी० थोम्ब्रे और उनके पुत्र को एक-एक करके रस्सी के सिरे तक लाने में सफल हुए, जहां से बचाव दल ने उन्हें ऊपर खींच लिया। दोनों पीड़ित व्यक्तियों को सुरक्षित बचाने के बाद लांस हवलदार राजाराम ने पहाड़ी से ऊपर खींचे जाने के लिए अपने को रस्सी से बांधा। इस दुष्कर कार्रवाई को करते समय ऊपर खींचे जाने के समय तक बेहोश हो गए थे और अपने इस साहसी बचाव प्रयास के दौरान ठण्ड लगने और गर्दन और बायीं जांघ में चोट लगने के साथ-साथ छाती में दर्द और शरीर में अत्याधिक ऐंठन हो गयी थी।

लांस हवलदार राजाराम ने दो व्यक्तियों को निश्चित रूप से काल का ग्रास बनने से बचाने में अपनी खुद की सुरक्षा की परवाह न करते हुए कमाल की पहल और विलक्षण साहस का परिचय दिया।

58. ज० सी०-151353 सूबेदार देव सिंह नेगी,
9, गढ़वाल राइफल्स,
मार्फत 56 ए० पी० ओ०

10-6-92 को सूबेदार देव सिंह नेगी अपने 15 अन्य सहयोगियों के साथ एक तीन टन वाहन में हरसिल से उत्तर-काशी जा रहे थे। लगभग 1800 बजे जब उनका वाहन नैताला गांव के पास पहुंचा तो उन्होंने देखा कि एक सिविल बस जो उत्तर काशी से गंगोत्री की तरफ जा रही थी लगभग 30 मीटर खड्ड में जा गिरी थी। यह खड्ड तेज बहाव वाली भागीरथी नदी की तरफ था। बस बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गयी थी और कई लोग बुरी तरह से घायल हो गए थे, कुछ लुढ़कती हुई बस से बाहर गिर गए थे और कुछ उसी में फंसे हुए थे असाधारण सूझबूझ और पहल का परिचय देते हुए उन्होंने अपने आदमियों को काम में जुटा दिया। ढलान बहुत तिरछा होने के कारण घायलों को ऊपर लाना मुश्किल था। रस्सियों का इस्तेमाल करते हुए वह अपने व्यक्तियों को बस के निकट ले गए। अपनी खुद की सुरक्षा की जरा भी परवाह न करते हुए फंसे हुए दो यात्रियों को बचाने हेतु वे स्वयं क्षतिग्रस्त बस में गए जो खतरनाक तरीके से ढलान पर अटकी हुई थी। उन्होंने घायलों को प्राथमिक चिकित्सा मुहैया करायी और गंभीर रूप से घायलों को वहां से अन्यत्र भेजा। असाधारण नेतृत्व तथा संगठनात्मक क्षमता दर्शाते हुए वे सभी 23 घायल व्यक्तियों को जिनमें से 15 की हालत गंभीर थी, सफलतापूर्वक सड़क तक ले आए। उन्होंने कुछ टेक्सी चालकों और जीप मालिकों से बुरी तरह से घायल 15 व्यक्तियों को जिला अस्पताल उत्तर काशी तक पहुंचाने के लिए प्रेरित किया।

सूबेदार देव सिंह नेगी ने मौत के मुंह में गए इन 23 व्यक्तियों की जान बचाने के लिए अद्भुत पहल, असाधारण नेतृत्व साहस और तत्परता का परिचय दिया।

59. श्री पी० लक्षमन्ना,
मुद्दागुदनापल्या तवारेकेरे मैन रोड,
क्राइस्ट स्कूल के पास,
16, 5वां क्रास, भारती लेआउट,
बंगलौर ।

23–10–92 की प्रातः 9.30 बजे एक बाल गृह के बरामदे में 6 फुट लंबा काला सांप दिखाई दिया जिसमें 1 वर्ष से 4 वर्ष के बीच के लगभग 8 बच्चे थे । इस बालगृह में कार्यरत दो महिला सहायक असहाय और भयभीत अवस्था में थी । श्री लक्षमन्ना सी०/एम०–II ने, जो संयोगवश उधर से गुजर रहे थे शोर सुना और तेजी से उस तरफ पहुंचे । उन्होंने देखा कि काला सांप फन उठाये खड़ा है । श्री लक्षमन्ना ने निर्भीकतापूर्वक सांप को मुंह के पास से पकड़ लिया और हालांकि वह उसे मार सकते थे, पर उन्होंने उसे बड़ी चतुराई से एक कांच के पात्र में रखकर राष्ट्रीय उद्यान को सौंप दिया । यदि वह अपनी सूझबूझ से तत्काल कार्रवाई न करते तो आठों बच्चों और दोनों महिला सहायकों की जान जा सकती थी ।

श्री लक्षमन्ना ने 8 अबोध एवं असहाय बच्चों और दो महिला सहायकों की जान बचाने में अपनी स्वयं की सुरक्षा की परवाह न करते हुए अदम्य साहस का परिचय दिया ।

60. जी० ओ० 1905–पी० ए० ई० ई० (ई० एंड एम०)
उमराव सिंह नेगी,
1068 एफ० डी० वर्कशाप (जी० आर० ई० एफ०),
मार्फत 99 ए० पी० ओ० ।

जी० ओ०–1905 पी० उमराव सिंह नेगी, सहायक कार्यकारी अभियंता (विद्युत् एवं यांत्रिक) को अरूणाचल प्रदेश के एक अति ऊंचाई वाले क्षेत्र में वर्कशाप अधिकारी के रूप में तैनात किया गया था ।

दिनांक 12–6–93 को, श्री नेगी निशान एक टन वी० ए० संख्या 16677 एक्स जिस पर वाहन मेकेनिक राजीव प्रसाद कार्य कर रहा था, के मरम्मत कार्य का अधीक्षण कर रहे थे अकस्मात् ही उन्होंने देखा कि एक टाटा एल० पी० टी० ढाल होने के कारण पीछे की तरफ आ रही है । उन्हें लगा कि वाहन मेकेनिक राजीव प्रसाद को खिसकते आ रहे वाहन के बारे में पता नहीं है और वह प्रत्यक्ष रूप से उस ट्रक की सीध में है जिसमें उसकी जान को खतरा हो सकता है, उन्होंने तुरन्त कार्रवाई की और वाहन मेकेनिक राजीव प्रसाद को एक ओर खींच लिया । इससे उसकी जान बच गई । इस प्रक्रिया के दौरान अधिकारी स्वयं गिर गया और पीछे लुढ़कती हुई वाहन से टकराया । ट्रक के पिछले पहिया उसकी दाहिनी पैर से टकराया जिससे उन्हें गंभीर चोट आयी और हड्डी टूट गयी ।

जी० ओ० 1905–पी० ए० ई० ई० (ई० एंड एम०) उमराव सिंह नेगी ने अपनी खुद की सुरक्षा की जरा भी परवाह किए बिना अपने अधीनस्थ कर्मचारी का जीवन बचाने में अदम्य साहस, सूझ-बूझ और उच्च कोटि की कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

61. जी०/172193–डब्ल्यू ओ० ई० एम०
कश्मीर सिंह,
55 रोड, कन्स्ट्रक्शन कंपनी,
16, वीं आर० टी० एफ०,
मार्फत 56 ए० पी० ओ० ।

द्रास जोजिला रोड की ग्रीष्म हिम निकासी में अपनी तैनाती के दौरान, जी 172193–डब्ल्यू० ओ० ई० एम० कश्मीर सिंह ने अपनी वैयक्तिक सुरक्षा तथा आराम की परवाह किए बगैर निरंतर 20 दिनों तक प्रातः 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक काम करके कर्तव्य के प्रति निष्ठा, साहस और निःस्वार्थ भावना का परिचय दिया । 10–5–93 को उन्हें 56 आर० सी० सी (दीकन) के सैक्टर में कि० मी० 107 और उससे आगे सोनमर्ग के तरफ तैनात किया गया था । जब वह डोजर चला रहे थे तो उन्होंने देखा कि दो आदमी तथा 3 खच्चर हिम स्खलन के द्वारा घाटी की ओर फिसले जा रहे थे । उन्होंने तत्काल डोजर को रोक दिया तथा अपनी जान को जोखिम में डालकर हिम स्खलन में कूद पड़े । बर्फ पर फिसलते हुए वे घटना स्थल पर पहुंचे । वहां उन्होंने पाया कि दो व्यक्ति तथा तीन खच्चर बर्फ के नीचे फंसे पड़े हैं । अदम्य साहस का परिचय देते हुए उन्होंने एक एक करके बर्फ से सभी को बाहर निकाल लिया । आक्सीजन की कमी के कारण वे स्वयं निढाल हो गए तथा लगभग 20 मिनट तक अचेत पड़े रहे ।

जी/172193–डब्ल्यू० ओ० ई० एम० कश्मीर सिंह ने अपनी सुरक्षा की बिलकुल परवाह न करते हुए मनुष्यों तथा पशुओं की जान बचाने में असाधारण कर्तव्यनिष्ठा, दृढ़निश्चय, साहस तथा मानवीयता का परिचय दिया ।

62. कोड संख्या 16409 सी० पी० मेट अतवारी राय,
ग्राम सेमर गढ़, शिकारीपुरा डाकघर
जिला दुमका, बिहार ।

63. कोड संख्या 16350 सी० पी० मेट सकारिया हेमराम,
ग्राम जिलकिया, पोस्ट–नाचुंगरिया,
जिला दुमका (बिहार) ।

कोड संख्या 16409 सी० पी० मेट अतवारी राय तथा कोड सं० 16350 सी० पी० मेट सिकारिया हेमराम दक्षिण मिजोरम में लंग्लाई–दिलल्वाग–पारवा मार्ग पर कार्यरत थे । 19–6–93 को असाधारण भारी वर्षा के कारण अचानक बाढ़ आ गयी जिससे सोनापुई नदी का जल स्तर 6 मीटर बढ़ गया । बाढ़ के पानी के तेज प्रवाह के कारण 38.5 कि० मी० पर स्थायी बेली ब्रिज को क्षति पहुंची जिससे यह रात में बह गया । 20–6–93 को कैप्टेन पी० वेंकटेश्वरलु ओ० आई० सी० 483 आर० एम० पी० आई० ने एक देशी नाव किराए पर ली तथा बह गए पुल के हिस्से पुर्जों की मरम्मत करने के लिए इसकी तलाश करने तथा नदी पार करने के लिए काम चलाऊ साधन तैयार करने का यत्न किया । सी० पी० मेट अतवारी राय तथा सिकारिया हेमराम अपने अधिकारी की सहायता के लिए नाव में सवार थे । जब उनकी नाव नदी के मध्य में पहुंच गई थी

सभी पानी के तेज प्रवाह के हिचकोले से नाव उलट गई तथा सवार सभी व्यक्ति पानी में जा गिरे। नाव चालक तथा अन्य सी० पी० मेट तैरकर किनारे पर आ गए। परन्तु अधिकारी चूंकि पानी की गहराई मापने में व्यस्त थे अतः उन्हें इसका पता नहीं चला तथा वह पानी के तेज प्रवाह में डूबने उतराने लगे। यह देख कर सी० पी० मेट अतवारी राय तथा सिकारिया हेमराम तत्काल उफनते पानी में कूद पड़े। निरंतर साहसपूर्ण प्रयास के बाद वे अधिकारी को डूबने से बचाने में सफल हुए।

सी० पी० मेट अतवारी राय तथा सिकारिया हेमराम ने अपने प्राणों की तनिक भी परवाह न करते हुए अधिकारी के अमूल्य प्राणों की रक्षा करके पुण्य कार्य में प्रशंसनीय साहस धैर्य तथा निष्ठा का परिचय दिया।

64. 4263165 सिपाही रामानंद ठाकुर,
12 बिहार, द्वारा 99 ए० पी० ओ०

15 सितम्बर, 1992 को सिपाही रामानंद ठाकुर आपरेशन राइनों के दौरान मंगलगाई ब्रिज के पास चौक प्वाइंट पर निगरानी ड्यूटी पर थे। निगरानी चौकी के समीप चार बड़ी पोखरिया हैं जिनके चारों ओर झोपड़ियों का समूह है।

लगभग 17.30 बजे सिपाही रामानंद ठाकुर ने करीब 150 मीटर की दूरी से एक छोटे बच्चे को एक तलाब में फिसलते हुए देखा। यह तलाब दलदल भरा है तथा लगभग 10 से 12 फुट तक गहरा है। यद्यपि अनेक लोगो ने यह घटना को देखा परन्तु उस गहरे पानी में कूदने का साहस किसी में नहीं था। बिना कोई समय गवांए सिपाही रामानंद ठाकुर तुरन्त घटना स्थल पर पहुंचे तथा अपनी निजी सुरक्षा की किंचित परवाह किए बिना कपड़ों सहित तलाब में कूद गए, तैर कर तीन वर्षीय डूबते हुए बच्चे के पास पहुंचे तथा उसे सुरक्षित बाहर निकाल लाए। बड़ी सूझबूझ तथा पहल शक्ति के साथ उन्होंने मास्टर अनंत-दास पुत्र श्री अमृत दास को कृत्रिम सांस दी तथा उसे शीघ्र अपने बटालियन हेड क्वार्टर पहुंचाने की व्यवस्था की जहां रेजिमेन्ट चिकित्सा अधिकारी ने उसका उपचार किया।

सिपाही रामानंद ठाकुर ने अदम्य साहस तथा दूरदर्शिता का परिचय दिया तथा अपनी जान की बाजी लगाकर तीन वर्ष के बच्चे को डूबने से बचाया।

65. भू० कैडेट कारपोरल (एन०सी०सी०) (मरणोपरांत)
अजीतपाल धीमान
5, पंजाब बटालियन,
नेशनल कैडेट कॉर्प्स,
पटियाला।

11 जुलाई, 1993 को पी० बी०/जे० डी०/90/18452, भू० कैडेट कारपोरल (एन०सी०सी०) श्री अजीत पाल धीमान एक इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा हेतु सरहिन्द से फतेहगढ़ साहिब गए थे। वहां उन्होंने देखा कि भारी वर्षा के कारण सरहिंद व फतेहगढ़ साहिब क्षेत्र जल-थल हो गया था तथा कुछ लोग मकानों की छतों पर फंसे हुए थे और मुख्य मार्ग पर पांच फुट पानी खड़ा था जिसके कारण कोई भी व्यक्ति बचाव कार्य करने में असमर्थ था। एक भूतपूर्व एन० सी० सी० कैडेट होने के नाते निर्भीक श्री धीमान अपने जीवन की परवाह किए बगैर पानी में फंसे लोगों तक पहुंचने के लिए जल में कूद पड़े। जल के तेज प्रवाह के बावजूद उन्होंने अनेक लोगों की जान बचायी तथा वे बिना रुके इस कार्य में लगे रहे। उनकी पहल तथा बहादुरी से प्रेरित होकर कुछ और लोग भी इस कार्य हेतु आगे आए। तथापि, लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के लिए उन्हें निकालने की प्रक्रिया में भू० कैडेट अजीत पाल धीमान स्वयं पानी के तेज प्रवाह में बह गए तथा अपनी जान से हाथ धो बैठे।

इस प्रकार भू० कैडेट कारपोरल अजीत पाल धीमान ने बाढ़ में फंसे लोगों की जान बचाने में उत्कृष्ट शौर्य तथा निस्वार्थ सेवा भावना का प्रदर्शन किया और इस प्रक्रिया में सर्वोच्च बलिदान दिया।

गिरीश प्रधान,
निदेशक

इस्पात मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 31 जनवरी 1994

संकल्प

सं० 22(7)/92-टी० डब्ल्यू–दिनांक 27 अगस्त 1993 के संकल्प सं० 22 (7)/92-टी० डब्ल्यू० में आंशिक संशोधन करते हुए यह निर्णय लिया गया है कि वर्ष 1992-93 के लिए एकीकृत इस्पात संयंत्रों के निष्पादन का मूल्यांकन करने के लिए निम्नलिखित भी जजों के पैनल के सदस्य होंगे :—

1. श्री परमानन्द त्रिपाठी
महासचिव
बोकारो स्टील वर्कर यूनियन
19, को-आपरेटिव हाउसिंग कालोनी
बोकारो स्टील सिटी-827001

आदेश

यह आदेश दिया जाता है इस संकल्प की प्रति सभी संबंधितों को भेज दी जाए। यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को आम जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

के० किपगेन,
संयुक्त सचिव

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

(शिक्षा विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 18 फरवरी 1994

संकल्प

सं० एफ० 25-4/93-यू०-3—भारतीय दर्शनशास्त्र अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के नियमों और विनियमों के नियम 10 में किये गए प्रावधानों के अनुसार भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला के निदेशक प्रो० मृणाल मिरि को

कार्यभार संभालने की तारीख से 3 वर्ष की अवधि के लिए भारतीय दर्शनशास्त्र अनुसंधान परिषद् के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया जाता है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रतिलिपि सदस्य-सचिव भारतीय दर्शनशास्त्र अनुसंधान परिषद् चतुर्थ तल राजेन्द्र भवन 210 दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 को भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प सामान्य सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

डी० एस० मुखोपाध्याय
संयुक्त सचिव

दिनांक 24 फरवरी 1994

संकल्प

सं० एफ० 6-7/91—यू०-3—जबकि भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान सोसाइटी शिमला के नियमों और विनियमों के नियम 3 के अनुसरण में भारत सरकार ने संकल्प सं० एफ० 6-7/91-यू०-3 दिनांक 01 जनवरी 1992 द्वारा भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान की सोसाइटी को पुनर्गठित किया। और जबकि भारत सरकार ने डा० एस० रामे गौडा कुलपति कर्नाटक विश्वविद्यालय और डा० डी० एन० मिश्र कुलपति बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय को भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला के सदस्यों के रूप में नियुक्त करने का निर्णय लिया है।

अत: केन्द्र सरकार सरकारी संकल्प सं० एफ० 6-7/91-यू०-3 दिनांक 01 जनवरी, 1992 में निम्नलिखित संशोधन करती है।

उक्त संकल्प में 3 (ख) (1) "भारत सरकार द्वारा मनोनीत भारतीय विश्वविद्यालयो के छ: कुलपति" के अन्तर्गत (2) और (6) के स्थान पर निम्नलिखित को प्रति स्थापित किया जाएगा :—

(2) डा० एस० रामे गौडा,
कुलपति,
कर्नाटक विश्वविद्यालय
पावाते नगर,
धारवाड़-580003

(6) डा० डी० एन० मिश्र,
कुलपति,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी-221005

डी० एम० मुखोपाध्याय
संयुक्त सचिव

(संस्कृति विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 18 फरवरी 1994

संकल्प

सं० एफ० 15-25/93-सी० एच० डेस्क/सतर्कता—इस विभाग के संकल्प सं० 7-18/82-सी० एच०-1, दिनांक 16 अगस्त, 1989 का अधिक्रमण करते हुए तथा संकल्प सं० 7-10/82-सी० एच०-1, दिनांक 14 दिसम्बर, 1987 का आंशिक संशोधन करते हुए, केन्द्रीय सरकार, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय समिति के गठन से संबंधित नियम सं० 3 के नीचे प्रविष्टि (11) के स्थान पर निम्नलिखित प्रविष्टि एतद्द्वारा प्रतिस्थापित करती है :—

"उपाध्यक्ष—अपर सचिव/संयुक्त सचिव, संस्कृति विभाग, भारत सरकार (पदेन)"।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति कार्यवाहक निदेशक, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, पोस्ट बैग नं० 7, सेक्टर ई/5, तवा हाउसिंग बोर्ड कम्पलैक्स, एरिया कालोनी, भोपाल-462016 को भेज दी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को जन साधारण की सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाए।

जी० वेंकटरमणी
निदेशक

कल्याण मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 21 जुलाई 1993

संकल्प

सं० 25-1/88-एच० डब्ल्यू-3—भारतीय पुनर्वास परिषद् के गठन से संबंधित इस मंत्रालय के समसंख्यक संकल्प दिनांक 22 जून, 1993 के क्रम में, पूर्व सदस्यों के अतिरिक्त, निम्नलिखित सदस्य को नामित किया जाता है :—

विकलांगों के पुनर्वास में कार्यरत चिकित्सक

1. डा० आर० के० श्रीवास्तव, परामर्शदाता एवं पुनर्वास विभाग प्रमुख, सफदरजंग हस्पताल, नई दिल्ली।

2 डा० आर० के० श्रीवास्तव का कार्यकाल उनकी नियुक्ति की तारीख से दो वर्ष या जब तक उनका उत्तराधिकारी नियुक्त नही हो जाता, जो भी अधिक हो, की अवधि के लिए होगा।

3. नामांकन की अन्य शर्तें वही होंगी जो 22 जून, 1993 के संकल्प में निहित है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की आम जानकारी हेतु भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

2. आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रति भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों, राज्य सरकारों, संघ राज्य क्षेत्रों, मंत्रिमंडल सचिवालय, योजना आयोग, प्रधानमंत्री कार्यालय, लोक सभा एवं राज्य सभा सचिवालयों को भेजी जाए।

ए० के० चौधरी
संयुक्त सचिव

दिनांक 25 सितम्बर 1993

संकल्प

सं० 25-1/88-एच० डब्ल्यू-3—भारतीय पुनर्वास परिषद् के गठन से संबंधित इस मंत्रालय के समसंख्यक संकल्प दिनांक 22 जून, 1993 तथा 21 जुलाई, 1993 के क्रमागत में, पूर्व सदस्यों के अतिरिक्त निम्नलिखित और सदस्यों को तत्काल प्रभाव से नामित किया जाता है —

1. विकलांगों के पुनर्वास के लिए कार्यरत चिकित्सकों में से सदस्य

(1) प्रो० वी० वे० दादा,
विभाग प्रमुख,
आर० पी० सैन्टर,
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान,
नई दिल्ली।

(2) डा० एस० निकाम,
निदेशक,
अखिल भारतीय वाणी एवं श्रवण संस्थान,
बंगलौर।

2. पुनर्वास-व्यवसायकों में से सदस्य

(1) श्रीमती सुधा कौल,
निदेशक स्पास्टिक सोसाइटी आफ ईस्टर्न इंडिया,
कलकत्ता।

(2) डा० आर० आर० कनौजिया,
नेत्र सर्जन,
पटना मैडिकल कालेज एवं हस्पताल
पटना।

3. सामाजिक कार्यकर्ताओं में से सदस्य

(1) प्रो० एस० वाई० सिद्दीकी, समाज-कार्य व्याख्याता,
जामिया मिलिया विश्वविद्यालय, दिल्ली।

(2) प्रो० के० ए० चन्द्रशेखरन, फेथ इंडिया, तिरुवनन्तपुरम

(3) मिशनरी आफ चैरिटी, कलकत्ता का प्रतिनिधि
(मदर टेरेसा का प्रतिनिधि)

4 विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से सदस्य

(1) प्रो० इ० पी० सिंह, सदस्य, संघ लोक सेवा आयोग

5 पदेन सदस्य सचिव

(1) श्री जे० पी० सिंह

2 सदस्यों का कार्य काल उनकी नियुक्ति की तारीख से दो वर्ष या जब तक उनका उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं हो जाता जो भी अधिक हो की अवधि के लिए होगा।

3 नामांकन की अन्य शर्तें वही होंगी जो 22 जून, 1993 के संकल्प में निहित हैं।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को आम जानकारी हेतु भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

2 आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रति भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों राज्य सरकारों, संघ राज्य क्षेत्रों मंत्रिमंडल सचिवालय योजना आयोग प्रधान मंत्री कार्यालय, लोक सभा एवं राज्य सभा सचिवालयों को भेजी जाए।

ए० के० चौधरी
संयुक्त सचिव

दिनांक 6 दिसम्बर 1993

संकल्प

सं० 25-1/88-एच० डब्ल्यू -3—भारतीय पुनर्वास परिषद् के गठन से संबंधित इस मंत्रालय के समसंख्यक संकल्प दिनांक 22 जून 1993, 21 जुलाई 1993 तथा 25 सितम्बर, 1993 के क्रम में, पूर्व सदस्यों के अतिरिक्त निम्नलिखित सदस्य को नामित किया जाता है —

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् से सदस्य

डा० सी० आर० रामचन्द्रन,
निदेशक-श्रेणी वैज्ञानिक,
भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद्,
असारी नगर,
पो० बाक्स सं० 4508,
नई दिल्ली-110029।

2 डा० रामचन्द्रन का कार्यकाल उनकी नियुक्ति की तिथि से दो वर्ष या जब तक उनका उत्तराधिकारी विधिवत् नहीं हो जाता जो भी अधिक हो, की अवधि के लिए होगा।

3. नामांकन की अन्य शर्तें वही होंगी जो 22 जून 1993 के संकल्प में निहित हैं।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को आम जानकारी हेतु भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

2. आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रति भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों, राज्य सरकारों, संघ राज्य क्षेत्रों, मंत्रिमंडल सचिवालय, योजना आयोग, प्रधानमंत्री कार्यालय, लोक सभा एवं राज्य सभा सचिवालयों को भेजी जाए।

ए० के० चौधरी
संयुक्त सचिव

श्रम मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 25 फरवरी 1994

सं० बी०—18011/4/93—आई० एच० एच० I—राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद् के नियमों और विनियमों के नियम 7 की धारा (ख) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद् के शासी निकाय के अध्यक्ष के रूप में श्री सी० बी० गरवारे को 31 दिसम्बर 1993 से तीन वर्ष की और अवधि के लिए नामांकित करती है।

राम तिलक पाण्डेय
उप सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 12th March 1994

No. 21-Pres/94.—The President is pleased to approve the award of 'Sarvottam Jeevan Raksha Padak' to the undermentioned persons :—

1. Master P. S. Anurag Murthy, (*Posthumous*)
C/o Shri P. S. Shridhara Murthy,
Plot No. 14, Public Sector Colony,
Noble Road, Bowenpally,
Secunderabad-500011.

On 26-7-1992, Master P. S. Anurag Murthy, a 14 year old boy alongwith his parents and locality people went to Osman Sagar on a picnic. While the elders were taking rest in the guest house, Master Anurag Murthy alongwith other boys went to Osman Sagar Lake and was enjoying at the lake shore. Meanwhile, two ladies of the same picnic party, also came over to the bank of the Osman Sagar and got into the water of the lake. Suddenly, both the ladies fell down into the water of the lake and raised hue and cry for help. Master Anurag Murthy, though not knowing how to swim, on seeing the women drowning in the water, immediately jumped into the water and was able to rescue the ladies. However, during the recue operation, he himself got drowned and lost his life.

Master Anurag Murthy showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of two women from drowning but unfortunately lost his own life in the process.

2. Second Lieutenant Sanjay Gupta (*Posthumous*)
(IC-50808),
C/o Shri M. L. Gupta,
10/1, Nabha House,
Shimla-4.

Second Lieutenant Sanjay Gupta, after completion of his Young Officer's Course at Pune, was returning to 5 Engineer Regiment by train upto Ambala and then boarded a bus on 20th July, 1992 to go to Chandigarh. The bus unfortunately caught fire after it hit a culvert and fell in a nearby ditch. Second Lieutenant Gupta without losing his calm and presence of mind took courage, broke open the rear window screen and bent some bars to facilitate his coming out of the burning bus. Unmindful of the high flames which engulfed the complete bus, he showed high sense of duty towards fellow passengers, entered the burning bus again and again despite the dangerous, fire and in the process saved many lives. His efforts can be gauged from the fact that only two passengers lost their lives (excluding his own) in the accident as he was successful in pushing many people out of the burning bus.

Second Lieutenant Sanjay Gupta showed tremendous presence of mind, courage and concern for human life in face of grave danger to his own life and saved the lives of two children and 6 to 10 other passengers. However this young officer lost his own life as he was engulfed in the flames of the burning bus.

G. B. PRADHAN,
Director

No. 22-Pres/94.—The President is pleased to approve the award of 'Uttam Jeevan Raksha Padak' to the undermentioned persons :—

1. Shri Ramesh Kumar (*Posthumous*)
C/o Shri Sagar Ram,
S/o Shri Krishna Ram,
Tehsil Fatehabad, District Hisar,
Haryana.

On 12-6-1992, a young boy named Mohender Singh, aged about 16-17 years, resident of village Dehman, was going to Bhuna. On the way, he left thirsty and went to a canal near village Bejalpur for drinking water. But he slipped into the canal and started drowning. Shri Ramesh Kumar who happened to be there and on seeing the boy drowning, jumped into the canal and saved the life of Shri Mohender Singh but in the process, he himself got drowned in the canal and lost his life.

Shri Ramesh Kumar displayed conspicous courage and promptitude in saving the life of a boy but in the process made the supreme sacrifice and lost his own life.

2. Smt. T. Leela, (*Posthumous*)
C/o Shri K. O. Paily,
Korackal Veedu,
Kuttampuzha, Devicolam Taluk,
District Idukki,
Kerala.

On 20-6-1992, due to heavy rain and strong wind, a country boat carrying passengers met with an accident in the 'Anakayam' in the Kuttampuzha village of Devikulam Taluk and capsized. All the passengers began to drown in the river 20 metres deep and having a width of 80 metres. Smt. Leela who was one of the passengers, took the initiative unmindful of the risk involved to her own life, and saved two passengers from drowning. In her further attempt to save the life of a third person, she herself was drowned in the river and lost her life.

Smt. Leela thus showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of two persons from drowning and in her attempt to save a third person, she made the supreme sacrifice.

3. 6905606 Havildar/Clerk Vijay Bhardwaj (*Posthumous*)
C/o Smt. Shashi Bhardwaj,
Vill. & P.O.—Jorhat,
Distt. Shivsagar,
Assam State.

On 16-3-1992 at about 08.15 hours, Havildar/Clerk Vijay Kumar Bhardwaj, while coming to his office saw a truck 1 Ton NSN coming on Patiala Road at a very high speed. He observed that the driver of the vehicle had lost cointrol over the vehicle. At that moment, he also saw a group of children crossing the road to attend Army School and Central School on the other side of the road. Maintaining his cool and presence of mind, he rushed towards the children and pushed them on the other side of the road. He lifted two small children in both his arms. However, in the process of saving them he was hit by the overspeeding vehicle. He fell down on the road, profusely bleeding and became unconscious and later succumbed to his injuries.

Havildar/Clerk Vijay Kumar Bhardwaj thus showed exemplary initiative, promptitude and conspicuous courage in saving the lives of school-going children and in the process made the supreme sacrifice and lost his own life.

G. B. PRADHAN,
Director

No. 23-Pres/94.—The President is pleased to approve the award of 'Jeevan Raksha Padak' to the undermentioned persons :—

1. Master G. Chandrashekar,
S/o Shri G. Mallappa,
House No. 12—78, Balajinagar,
Kodangal, Mahabubnagar Distt.,
Andhra Pradesh.

On 28-2-1990, disgusted with domestic problems, on Smt. Harijan Mogulamma, aged 60 years, and a resident of Kodangal tried to commit suicide by drowning in a well near Zilla Praja Parishad (Boys) High School, Kodangal. The students of the school who saw the old women jumping into the well informed their teachers immediately. Master G. Chandrashekar who heard the other students telling their teachers about the incident immediately rushed towards the well. Without caring for his own safety, he jumped into the well and rescued the old woman.

Master G. Chandrashekar thus showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a drowning woman unmindful of the risk involved to his own life.

2. Shri Raj Kumar Sharma,
Sanjay Electronics Works,
Katla Ramleela, Hissar,
Haryana.

On 5-11-91; Deepawali day, the first floor of the house of Shri Babu Ram, Commission Agent, Caught fire due to firing of crackers. All the adult members of the family ran out of the house. However, a four year old boy could not run out was trapped inside the burning house and nobody dared to go inside the burning house to rescue the boy. Shri Raj Kumar who runs an electronics shop near the residence of Shri Babu Ram took courage and entered the burning house unmindful of the risk involved to his own life and succeeded in bringing out the boy safely. In this rescue process, he received burn injuries.

Shri Raj Kumar Sharma showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a small boy from burning unmindful of the risk involved to his own life.

3. Shri Tulsi Ram,
Constable No. 225,
Police Station, Rampur,
(Bushaher)/Distt. Shimla,
Himachal Pradesh.

On the morning of 26th April, 1992, Kumari Dharam Mamte of village Duni, Tehsil and Police Station Kalpa, District Kinnaur who had come to Tehsil Rampur in Shimla Distt. went to the bank of the Dariya Satlej to answer the call of nature and while she was washing her hands and face, she suddenly slipped into the river about 50 metres in width, about 13 mts. in depth (the current of the water also was very fast) and cried for help. On hearing her cries, people gathered at the spot. Assessing the situation Constable Tulsi Ram who had also come there, immediately jumped into the river and saved the life of Kum. Mamte.

Constable Tulsi Ram showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a young girl from drowning unmindful of the grave risk involved to his own life.

4. Kumari Geeta Devi,
D/o Shri Mangshiru,
Village—Chichbari (Rohel), P.O. Khana-Thana (Rohel), Tehsil Chirgawn,
Distt. Shimla,
Himachal Pradesh.

On 3-9-1992, a boy named Sanjeet Kumar of Chichbari village suddenly fell in the Andhra River near village Chichbari (Rohel). Kumari Geeta Devi who is resident of the same village saw this incident. She immediately jumped into the river without caring for her own life. The current of the overflooded river was so powerful that Geeta herself was taken by the fast current but finally succeeded in rescuing Sanjeet.

Kumari Geeta showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a boy from drowning unmindful of the grave risk involved to her own life.

5. Master Muzahil Ibrahim Draboo,
S/o Shri Mohd. Ibraham Draboo,
6-Dak Manzil, KURSU Raj Bagh,
Srinagar-190008.

On 24-9-1992, while the boys of the 3rd Primary of Tyandale Bisco Memorial School were waiting for game period on the rim of the School Swimming pool, a nine year boy, Master Madassar was pushed into the swimming pool by another boy. He started crying for help. On hearing his cries, Master Muzamil Ibrahim Draboo, a fellow student, who had recently learnt swimming, jumped into the pool and fished him out of the water and thus saved the precious life of Madassar without caring for his own life.

Master Draboo, despite his tender age, showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a boy from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

6. Shri Abbas,
S/o Shri Soopi,
Dry Fish Merchant,
Sasaba Bengare,
Mangalore.

7. Shri Abdul Nazeer,
S/o Shri Ismail, Casaba,
Bengare, Mangalore.

8. Shri Abdul Razak,
S/o Shri Idinabba,
Casaba, Bengare,
Mangalore.

9. Shri Gopal,
S/o Shri Mara,
Excise Guard,
Sea Squad, Mangalore.

10. Master Mohammad Anwar,
S/o Shri Moideen Kunbi,
Xth Standard, Badria High School,
Mangalore.

11. Shri Mohammad Monu,
S/o Shri Sayyad Ali,
Casaba, Bengare,
Mangalore.

12. Shri Mahammad Sali,
S/o Shri Ibrahim,
Casaba, Bengare,
Mangaloie.

13. Master Nawshad,
S/o Shri Abdul Ahiman,
Casaba, Bengare,
Mangalore.

14. Shri Rathnakar Puthran,
S/o Shri Krishnappa Amin,
Tug Driver,
Port Town, Mangalore.

15. Shri Sadananda Amin,
S/o Shri Lingappa Suverna,
Krishnappa Mane,
Karnal Garden,
Kudroli, Mangalore.

On 15-6-1992 at about 4.45 P.M., a passenger boat carrying 80 school children and 10 adults going from Mangalore to Kasba-Bengre capsized in Gurpur river near Dakke in the limits of Mangalore Police Station. As a result, all the school children and the other people who were in the boat fell into the deep water. On seeing this incident, S/Shri Abbas, Abdul Nazeer, Abdul Razak, Gopal, Master Mohammad Anwar, Mohammad Monu, Mohammad Sali, Master Nawshad, Rathnakar Puthran and Sadananda Amin jumped into the river without caring for their own lives and rescued as many as 78 people including 68 school children. In this incident, 12 children lost their lives due to drowning.

S/Shri Abbas, Abdul Nazeer, Abdul Razak, Gopal, Master Mohammad Anwar, Mohammad Monu, Mohammad Sali, Master Nawshad, Rathnakar Puthran and Sadananda Amin showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of 78 persons unmindful of the risk involved to their own lives.

16. Shri Mary Suthan E. M.,
Mary Sadanam, Kaithakody,
Vellimon P.O.,
Perinad Village,
Kollam Taluk, Kollam District,
Kerala State.

On 7-4-1991 at 10.30 A.M., a country boat with six passengers capsized in the Kanhirakode river. Seeing the incident, Shri Mary Suthan rushed to the spot in a country boat and jumped into the river (50 ft. deep) and saved four of them from sure death. This action on the part of Shri Mary Suthan is all the more praiseworthy because he was not daunted by the fact that his own brother had lost his life in a similar endeavour to save the life of a person who had drowned in the water in 1981.

Shri Mary Suthan displayed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of four persons from drowning unmindful of the grave risk involved to his own life.

17. Shri C. Mohammed Ali,
Chaliyathody House,
Chemmanthatta,
P.O. Thachininganadam,
Perinthalmanna,
Kerala.

On 21-6-1991 at 6.00 P.M., Smt. Lakshmi alias Thanku, aged 35, and her son Master Suresh aged 11 went for a bath in the nearby river. Accidently, the child slipped into the river and began to drown. To save her son from death, Smt. Lakshmi also jumped in to the river. But unfortunately she too began to drown. At that time, Shri Mohammed Ali, aged 21, a college student, was coming to the river for taking bath. Suddenly, he noticed that two persons were struggling in the water. Without losing time, he jumped into the river and saved the woman and child from drowning. The incident occurred at the time when the monsoon was very severe and the water level was deep (about 6 metres). Shri Mohammed Ali not only brought them out but also gave first aid to the woman and child and took them to their house.

Shri Mohammed Ali thus showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of a mother and child from drowning unmindful of the grave risk to his own life.

18. Shri Murali,
Pulparambil Veedu,
P.O. Medical College,
Nellicode Village,
Kerala.

19. Shri Ramesh,
Pulparambil Veedu,
P.O. Medical College,
Nellicode Village,
Kerala.

On 4-7-1991, three thieves made an attempt to rob the house of Shri Devassya, a school teacher. In their effort to rob the house, they also attacked Smt. Gladis, wife of Shri Devassya. On hearing her cries, Shri Murali alongwith Shri Ramesh reached the site of the incident and saved the life of the lady. The thieves ran way. Shri Murali and Shri Ramesh however, followed and caught the thieves ignoring their own safety. In the process, they were stabbed by the thieves and received serious injuries.

Shri Murali alongwith Shri Ramesh showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a woman, trapping as well catching the thieves unmindful of the risk involved to their own lives.

20. Kumari Manju Chandran,
Moothedathu House,
Thottamnon,
Ranni, Pathanamthitta,
Kerala State.

On 2-3-1992, two children named Praveen and Jose Marydas went for bath in the Pumpa river at Thottamon, Ranni. Accidently, they fell into the deep water of the river. Hearing their cries from the bathing ghat, the nearby inhabitants came there but none dared to make any effort to rescue them. At this time, Kumari Manju Chandran, a 14 year old girl and a student of Xth standard who was among them, took courage and jumped into the river and successfully saved the children from drowning and brought them to the shore one by one. The depth of the water at the place of accident was 8 feet.

Kumari Manju Chandran showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of two children from drowning unmindful of the risk involved to her own life.

21. Shri A. L. Antony,
S/o Shri Manjuly Lonappan alias
Kochappan, Chengalur Village,
P.O. Chengalur, Mukundapuram Tal.,
Trissur Distt., Kerala.

22. Shri K. V. Asokan,
S/o Shri Kuzhuppilly Velayudhan,
Nellayi Village, Panthallor P.O.
Mukundapuram Taluk, Trisur Distt., Kerala.

On 11-3-1992 at 2.30 P.M. nine persons belonging to Ceylone Pentecost Christian Community were crossing the Karumali River at Nalli Lift Irrigation Kadavu in a country boat. These persons did not know how to accommodate themselves quietly in a country boat while crossing the river On seeing the vast span of water around, they got frightened and began to move about in the boat. In the process, the boat lost its balance and capsized. All the nine passengers including the boatman fell in the water and were struggling. Shri Asokan operating the Nellayi Lift Irrigation motor on the western side of ferry heard the shrieking cries from a distance of almost 50 metres from the place of incident. As he had no boat on that side of the river, he immediately swam towards the point of the tragedy. By that time, another person Shri A. L. Antony, who also heard the cries of the struggling passengers had already arrived on the scene and rescued two women and was struggling to save a third woman and also his own life in 50 feet deep water. In this joint effort, Shri Antony succeeded in saving the lives of three drowning women and Shri Asokan also saved the lives

of three other drowning persons and was also instrumental in assisting Shri Antony in his final attempt for rescuing the third woman. Six persons were rescued finally and three persons lost their lives in the incident.

S/Shri A. I.. Antony and K. V. Asokan showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of six persons from drowning unmindful of the risk involved to their own lives.

23. Shri Vaduvathiriyan Ramesan,
S/o Shri Kunhiraman, Mattool,
Mattool South, P.O. Mattool.
District Kannur, Kerala.

On 13-6-1992, a country boat sailing with 4 passengers capsized in the river locally called 'Thekkumbattukadavu' in Madakkara of Mattool Village. The river was flooded and the water current was very strong. 5 persons including the boatman were thrown out into the river. One passenger somehow saved himself by swimming. The spot of the accident was about 10 metres from the bank and the river was about 12 feet deep at that point. Shri Ramesan, the driver of the motor boat 'Thavakkal' also doing passenger service in that river happened to see the accident. Being aware of the gravity of the danger, he drove his boat towards the capsized boat. He threw a rope to the victims. One of them, Shri Shahul Hameed caught it and he was rescued. The others were going downwards along with the current. Then Shri Ramesan plunged into the water and swam towards the victims. He caught Shri Ibrahim and Aleema and carried them to his boat. However, another attempt of Shri Ramesan to save a 14 year old girl Safia was in vain.

Shri Vaduvathiriyan Ramesan showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of 3 persons unmindful of the risk involved to his own life.

24. Shri Valiyakath Ahammunny Shoukathali,
Valiyakath House, Kallumkadavu IInd Ward,
Edathuruthy Panchayat, P.O. Pynoor,
Valapad, Kerala.

On 5-7-1992 at about 3 P.M. a country boat carrying five passengers capsized in the Canoly canal near Kallumkadavu, Edathuruthy, Kodungalloor Taluk. Due to heavy rain and overflow of water, the water was 8 metres deep at that spot. The passengers did not know swimming and were about to drown. Though a large crowd had gathered on the bank of the river, nobody came forward to their rescue. At that time, Shri Shoukathali who had also reached that place, jumped into the river and saved the lives of all the five persons, one by one.

Shri V. A. Shoukathali displayed a very high standard of courage and promptitude in saving the lives of 5 persons from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

25. Shri Johan Lawrence,
Thottathil Veedu, Neendakara,
Kollan Distt., Kerala.

On 8-8-1992, as the fishing boats were returning from the sea, 10 boats sank in the rough sea and the fishermen were thrown into the sea. The people on the sea shore, the other fishermen in the sea and the staff of Neendakara Port were helplessly witnessing the terrible danger that was before the fishermen of the 10 boats which had sunk. In this critical situation, Shri John Lawrence took initiative and went out into the rough sea in his own small boat named "Kannappan" and saved 21 valuable lives from the jaws of death. In the process, his small boat got sufficiently damaged.

Shri John Lawrence showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of 21 persons unmindful of the grave risk involved to his own life.

26. Master Charaffuddin Puthukkidi,
S/o Shri Ibrahim, Puthukkidi House,
Achanambalam, P.O. Kannamagalam,
Malappuram Distt., Kerala.

On 20th August, 1992, while returning from school Master Sharaffuddin, a 9th standard student, saw a small crowd near a pond. He found that small boy (9 year old) was drowning. When all others were looking anxiously, Master Sharaffuddin, ignoring risk to his own life jumped into the pond and saved the boy who was by then unconscious and in a critical stage. The depth of water at the place of the accident was 40 feet.

Master Sharaffuddin showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a small boy from drowning unmindful of the grave risk involved to his own life.

27. Kumari V. Vijyasree,
Thullattu Veedu, Kumaramkari P.O.
Kuttanad, Alappuzha, Kottyam.

On 14-6-1993 at 9.30 a.m., Kumari Sabitha, a 2nd Standard student of L. P. School, Vazhapally, on her way to school slipped down in the kuttissery Gerry—Kumaramkari canal which was about 4 metres in depth at the place of the incident and was caught in the strong currents of the canal and began to drown. Kumari B. Vijayasree, a college student, who was on her way to college happened to see this incident and without losing any time immediately jumed into the canal and saved the child from drowning. The timely and courageous action of Kumari Vijayasree saved the child from death.

Kumari Vijayasree thus, showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a small girl from drowning unmindful of the grave risk involved to her own life.

28. Shri Munni Lal,
S/o Shri Bhayyadeen Ahirwar,
Rani Bagh, Tehsil Laudhi,
Chhatarpur, Madhya Pradesh.

On 26-3-1992, at about 6 P.M. and while playing Master Prakash Soni, a four year old child, accidentally fell into a deep well. His 13 year old sister who was drawing water from the well at that time shouted for help. On hearing the call, Shri Munni Lal who was sitting nearby, rushed to the site of the mishap unmindful of the risk involved to his own life, jumped into the 40 ft. deep and narrow well and saved the child from drowning.

Shri Munni Lal showed courage of a high order and promptitude in saving the life of a small child from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

29. Shri Pushpendra Kumar Bharati,
C/o Kunwar Rajbir Singh (Retd.),
Ranger, Room No. 16, Block-A,
Pramod Van, Chitrakoot,
Distt. Satna, M.P.

On 16-7-1992, Smt. Ranjana Srivastava, Principal Surendrapal Vidyalaya, Chitrakoot was cooking food in Quarter No. 26, Block-C of Pramod Van, Chitrakoot known as "Vridha Seva Sandan". Suddenly the gas cylinder caught fire and Smt Ranjana shouted for help. On hearing frantic calls for help, Shri Pushpendra Kumar Bharati, who was passing that way, despite his young age, rushed for help unmindful of the risk involved ti his own life as the burning gas cylinder could burst any moment. He threw the burning gas cylinder outside the room. Had he not done this, the burning cylinder would have certainly exploded causing great loss of life and property.

Shri Pushpendra Kumar Bharati showed courage of a high order and promptitude in saving the life of a lady from burning. But for his timely action there would have been enormous loss of life and property.

30. Shri Dilip,
S/o Shri Baijnath,
19, Ahilya Road, Guiva Mohalla,
Sanawad Town, Madhya Pradesh.

On 28-7-1993 at about 6.30 P.M., one Madhya Pradesh State Roadways Transport Corporaion Bus had fallen into the overflooded Bakur River while crossing a culvert. Shri Dilip saw one lady who had fallen from the ill-fated bus and taken away by the fast floowing current of the river and about to get drowned. He immediately jumped into the overflooded river and saved the lady.

Shri Dilip displayed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a woman from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

31. Shri Jayram,
S/o Shri Dublu Kahar,
34, Raj Mandir Gali,
Ahilya Road, Sanawad Town,
Madhya Pradesh.

On 28-7-1993 at about 6.30 P.M., one Madhya Pradesh State Roadways Transport Corporation Bus had fallen into the overflooded Bakur River while crossing a culvert. One lady was crying for help to save her child who was drowning in the river. Hearing this, Shri Jayram jumped into the river and saved the child. After that he saved an old man who had fallen into the river and was about to be drowned. With the help of a rubber tube, he also rescued four other persons from the fast flowing flooded river and brought them ashore.

Shri Jayram displayed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of six persons from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

32. Shri Nannu,
Nagar Palika Compound,
Sanawad Town,
Mahya Pradesh.

On 28-7-1993 at about 6.30 P.M., one Madhya Pradesh State Roadways Transport Corporation Bus had fallen into the overflooded Bakur river while crossing a culvert. Seeing this, Shri Nannu, with the help of a rope immediately helped 8-10 passengers of the ill-fated bus out of the water. When he saw some more passengers were taken by the strong current of the flooded river, he took a rubber tube and jumped into the river and saved 4 persons from drowning.

Shri Nannu displayed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of four persons from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

33. Shri Govind Sahadev Mainkar,
At-Masura Marde,
Tal.-Malvan,
Distt.-Sindhudurg,
Maharashtra.

34. Shri Janardan Balkrishna Mungekar,
At-Masura,
Tal.-Malvan,
Distt.-Sindhudurg,
Maharashtra.

35. Shri Suresh Baliram Rane,
At-Masura Marde,
Tal.-Malvan,
Distt.-Sindhudurg.
Maharashtra.

36. Shri Hussain Sayyed Ibrahim,
At-Masura,
Tal.-Malvan,
Distt.-Sindhudurg,
Maharashtra.

On 1-6-1992 at about 1630 hrs., seven persons were travelling from Masura to Bankiwada in a country boat in Masura Creek. After crossing about 100 mtrs., the country boat overturned due to strong wind and all the seven persons were thrown in the water. The depth of the water at the spot where the boat overturned, was 17 ft. One of the passengers climbed the top of the overturned boat and started shouting for help. Hearing the shout, S/Shri Govind Sahadev Mainkar, Janardan Balkrishna Mungekar, Suresh Baliram Rane and Hussian Sayyed Ibrahim jumed into the water and swam towards the spot and lifted four persons (who were unconcious by then) above the water level, till the ferry boat reached the spot and rescue them. The fifth person who managed to climb upon the turned country boat was also saved by these four persons. Of the group of seven, two persons were drowned.

S/Shri Govind Sahadev Mainkar, Janardan Balkrishna Mungekar, Suresh Baliram Rane and Hussain Sayyed Ibrahim showed conspicuous courage and promptitude in saving five lives from drowning unmindful of the risk involved to their own lives.

37. Master Abhijit Pramodrao Deshmukh.
At Navi Basti, Ward No., 76,
Badanera, Distt. Amravati,
Maharashtra.

On 26-2-1993, Master Rahim, a six year old student of Mahanagarpalika School No. 23, Badanera, while playing, fell into a 5 feet deep underground tank full of water and was drowning. Master Abhijit, a handicapped student of Standard III of the same school who was also playing nearby, noticed the hands of Master Rahim above the water level. He swung into action immediately and caught hold of a hand of Master Rahim and shouted for help. The other students who were around rushed to his help and helped him to pull the boy out of the tank.

Master Abhijit Pramodrao Deshmukh, despite his own handicap, displayed promptitude, courage and concern for human life in saving the life of a boy unmindful of the risk involved to his own life.

38. Master David (Letgoulek) Gangte,
S/o Shri S. N. gangte,
New Lambulane
Imphal, Manipur.

On 18-2-1993 at about 2.00 P.M., on a rainy day, 2-1/2 years old Baby Hatkholam, who was playing near a well about 5/6 ft deep, accidentally slipped and fell into the well. On seeing this Master David who happened to pass near the well, thrust himself swiftly into the well without any regard to his own life. He cought the hand of the drowning boby and pulled the baby out of the well and thus saved his life. Master David did not know swimming but the urge to save a human life made him to act unmindful of his own safety.

Master David even though of tender age, showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a small boy from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

39. Shri Zonunkhuma,
S. Hlimen, Aizwal,
Mizoram.

There are some stone quarries in the village S. Hlimen. Labourers from Dumka Distt. of Bihar and some local people work in these quarries and are residing below the quarries along the PWD road. On 9-8-1992, at about 3.40 A.M. when all people were asleep, a heavy landslide from the hill slope of the quarries took place. Hearing the unusual sound of falling stones from the quarries, Shri Zonunkhuma woke up. Realising the impending danger, he immediately raised an alarm running to and fro amidst falling stones without minding his own safety. Within about 10 minutes, he could physically carry a few children to safety and could save the lives of 16 persons in all before the main disaster struck in which he also could barely escape. 66 persons were killed in the disaster.

Shri Zonunkhuma displayed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of 16 persons in the midst of a terrible and disasterous land / stone slide unmindful of the risk involved to his own life.

40. Master Lalnunpuia,
S/o Shri Chalkhuma.
Hnahthial Lunglei Distt
Mizoram

On 3-4-1993, about 40 minor boys and girls went to a nearby jungle to collect jungle leaves. After collecting the leaves, Some of the boys went to the Mat river for bath During the process, unfortunately, four boys of the group did not know swimming were accidentally caught by the current of the river and were in danger of losing their lives. Master Lalnunpuia and two of his friends-I. Vanlalmuana and

Lalnunsanga saw one of their friends namely J. Lalremruata drowning and wa being taken away by the fast current of the river. Seeing the plight of their friend, they immediately jumped into the river and jointly pulled him out to the bank. Thus, Master Lalnunpuia and two of his friends jointly saved J. Lalremruata from an almost certain death

Master Lalnunpuia, showed conspicuous courage and promptitude, together with his two friends, in saving the life of their friend from drowning.

41. Master Lalnunsanga,
S/o Shri Thatilana, Hnahthial,
Lunglei Distt.,
Mizoram

On 3-4-1993, about 40 minor boys and girls went to a nearby jungle to collect jungle leaves. After collecting the leaves, some of the boys went to the Mat river for bath During, the process, unfortunately four boys of the group who did not know swimming were accidentaly caught by the current of the river and were in danger of losing their lives. Master Lalnunsanga and two of his friends-J Vanlalmuana and Lalnunpuia found that one of their friends namely J. Lalremruata was being taken away by the fast current of the water. Seeing this, they immediately jumped into the river and jointely pulled the victim Lalremruata out of water. Thus, they saved the life of Lalremruata from sure death at the risk of their own lives.

Master Lainunsanga showed conspicuous courage and promptitude, together with his two friends, in saving the life of their friend from drowning.

42. Master J. Vanlalmuana,
S/o Shri J. Lalnunmawia,
Hnahthial, Lunglei Distt.,
Mizoram.

On 3-4-1993 around 10 A. M. about 40 minor boys and girls went to a nearby jungle to collect jungle leaves. After collecting the leaves, some of the boys went to the Mat River for bath. Unfortunately, four boys who did not know swimming were accidentally caught by the current of the river and were in danger of losing their lives. Master J. Vanlalmuana who was instrumental in saving earlier two of his friends with the help of others was shown the place where another boy joseph Lalhruaitluanga was feared to have been drowned. J. Vanlalmuana immediately jumped into the river and found him at the bed of the river and dragged him out to the bank by which time joseph Lalhruaitluanga was already in an unconscious state. J. Vanlalmuana started giving him artificial respiration, the technique of which he had learnt at school. This was successful and the boy regained consciousness and slowly recovered.

Master J. Vanlalmuana showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a boy from drowning and was also instrumental in saving two other boys in a joint venture with his friends.

43. Master Vanlalthlenga.
S o Shri Sanghleia,
Hnahthial, Lunglei Distt.,
Mizoram.

On 3-4-1993 around 10 A.M. about 40 minor boys and girls went to a nearby jungle to collect jungle leaves. After collecting the leaves, some of the boys went to the Mat river for bath. In the process, unfortunately 4 boys of the group who did not know swimming, were accidentally caught by the current of the river. Master Vanlalthlenga, on seeing one of his friends namely P. C. Lalnghinglova drowning and in danger of losing his life, immediately jumped into the river and successfully pulled him out of the river and thus saved him from drowning. (He, together with his friend J Vanlalmuana was also instrumental in saving the life of another friend in the same eqisode).

Master Vanlalthlenga showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of one of his friends from drowning and also in saving the life of another from drowning jointly with Master J. Vanlalmuana.

44. Master Gopal Putel,
S/o Shri Deenabandhu Putel,
At Kotsira, P. O., P. S. Tarva,
Distt. Bolangir, Orissa.

On 25-11-91 at about 9 A.M., an 8 year old boy Gopal Putel was holding his younger sister Gandhari Putel, aged about 2 years in his lap and plucking flowers. While plucking flowers, both of them down into a well with 15 feet deep water. The ground was about 12 feet about the water level. On falling into the well, Gopal Putel held his younger sister with one hand above the water and began swimming with the other hand to save his sister and himself from drowning A lady named Champu Putel saw both the children having fallen in the well and raised an alarm. On hearing the alarm, Panchamukha Patel and Magsira Patel ran from their houses to the spot and rescued both Gopal and Gandhari.

Master Gopal Putel showed exemplary courage and presence of mind in keeping himself and his sister afloat before help could reach them and in the process saved the life of his sister and his own.

45. Master Ratan Karna alias Mottu.
S/o Shri Sudarsan Karna, P. O.
Kadaligarh, P. S. Rairakhol,
Distt. Sambalpur, Orissa.

On 21-7-1993 at about 1 30 P. M. a country boat with 26 passengers was crossing the river Mahanadi from Kaikata side to Boudh Ghat. While the boat was in the middle of the river, a strong whirlwind accompanied by rain lashed the boat and it capsized. Eight year old school boy namely Ratan Karna who was in the boat saved the lives of his mother and two other ladies by holding their hair and providing a wooden plank to them for their shelter.

Master Ratan Karna showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of three ladies from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

46. Shri Dinesh Kumar. (Posthumous)
S o Shri Ratan Lal Kalal,
Village & Tehsil Devgarh.
District Udaipur, Rajasthan.

On 11-8-1992, in village Chandrai of district Jalore, due to heavy rainfall, a nullah was overflowing Three persons were trapped in the flooded nullah. Shri Dinesh Kumar, without caring for his own life, took the initiative and was successful in saving the lives of 2 drowning persons. In his attempt to save the life of the third drowning person, he himself got trapped in a thorny bush and thus lost his own life.

Shri Dinesh Kumar showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of two persons from drowning and while saving the third trapped person he lost his own life.

47 Master Praveen Kumar,
S/o Shri Narayan Lal Patel,
At-Post Dumri Tehsil & District,
Dungarpur (Rajasthan)

On 8-2-93 Kumari Lata, an eight year old girl while playing went to a well for drinking water but she slipped and fell into the well. The well was 28 feet deep. Master Praveen Kumar who was around, on seeing this, rushed to the spot He immediately jumped into the well and rescued the girl. But for his timely rescue act, the girl would have lost her life.

Master Praveen Kumar showed exemplary courage and promptitude in saving the life of an eight year old girl unmindful of the risk involved to his own life.

48 Kumari Kanwara Devi,
Haripurkala, Janpad, Dehradun,
Uttar Pradesh.

In the midnight of 11/12 November, 1992, a wild elephant attacked the hut of Smt Amar Singh and killed his four year old daughter on the spot. At this point of time, 11 years old daughter of Shri Amar Singh, Kumari Kanwara Devi Moved her other two sisters and one brother from the site of incident to a safer place where she herself took shelter. It was only because of her courage, presence of mind and timely action that Kumari Kanwara Devi could save the lives of three children and that of herself from the attack of the wild and furious elephant.

Kumari Kanwara Devi thus showed conspicuous courage and presence of mind in saving the lives of three children as also her own from a violent elephant unmindful of the risk involved to her own life.

49. Master Tushar Khetrapal alias Honey,
112/317, Swarup Nagar,
Kanpur.

Master Tushar Khetrapal had gone to his grandfather's house at Balrampur, Kanpur District. On 5-6-1991 at about 2.30 a.m. when Shri Ratan Lal Gulati, the grand-father of Shri Khetrapal and the family were asleep, four thieves entered the house through the roof of the house. Shri Ratan Lal was sleeping in one of the rooms. When he heard the sound of the door opening, he woke up. When he saw the thieves, he caught one of them and started shouting for help. Hearing the cries of help, Shri Dinesh Khurana, Master Tushar Khetrapal and two ladies of the house rushed to the room and also tried to catch the thieves. The thieves, however, attacked them with knives and all of them got wounded and Master Tushar's mother received serious injuries and later died in the hospital. Master Tushar Khetrapal, though also seriously wounded, did not allow the thief in his grip to escape and later handed him over to the police. But for the bravery displayed by Master Khetrapal, the other three lives would have been in danger.

Master Tushar Khetrapal displayed courage in resisting the thieves.

50. Master Adusumilli Sree sai Satish,
S/o Shri Adusumilli Seshagiri Rao,
51, The Mall Road, Meerut-250001,
Uttar Pradesh.

On 25th June, 1993 at about 5.30 P.M, the horse of Lt. G.S. Gill, who was riding in a group across country fell into a 15 to 20 ft. deep pond as the horse he was riding bucked and threw him away. Gill not being a swimmer started drowning Seeing this, 15 year old Master Adusumilli Sree Sai Satish who was also riding in the vicinity, though handicapped due to his tight fitting breeches and long riding boots, without losing any time and unmindful of his own safety jumped into the pond and swan towards Gill. The breeches and boots which Satish was wearing greatly impeded his swimming movements. Despite all these odds, Satish did not lose his presence of mind and determination and with one hand in tight grip of Gill, he kept on inching towards the bank, though totally exhausted. After a serious struggle, he pulled Shri Gill to safety.

Shri Adusumilli Satish thus showed courage of a high order and promptitude in saving the life of an officer from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

51. Shri Snehasish Dutta, (Posthumous)
S/o Shri Anil Dutta,
Nazrul Sarani, Hakimpara,
Siliguri-734401,
Distt. Darjeeling (West Bengal).

The North Bengal Explorers' Club pitched their annual camp at Beni on the confluence of the rivers Teesta and Rangeet in the district of Darjeeling during 25-12-92 to 29-12-92.

On 29--12-1992, the river crossing practice was arranged over the river Rangeet by three instructors of the said club under the leadership of Shri Durbar Ghosh. Unfortunately Shri Durbar Ghosh got entangled with rope and lost his balance and fell down in the river and was carried away by the fast current (2.39 metre/second). Shri Snehasish Dutta who was entrusted with the duties of a camp guide and was sitting on the bank with the kids, felt the gravity of the situation and being urged by human feelings jumped into the river to save the life of Shri Durbar Ghosh, even though he did not know how to swim. His heroic effort helped Shri Ghosh to come back to senses but Shri Snehasish Dutta failed to hold the rope and was swept away by the strong current and got drowned.

Shri Snehasish Dutta showed exemplary courage and devotion to duty in trying to save the life of Shri Ghosh and in the process sacrificed his own life.

52. Shri Narender Singh Pawar,
Qr. No. 795, Sector-VIII,
R. K. Puram, New Delhi.

On 23-5-1990, a fire broke out in Qr. No. 791, Sector VIII, R. K. Puram, New Delhi. A girl who was alone in the quarter sought help from house to house. However, nobody dared to take any concrete step to control/extinguish the fire which was threatening to spread to the adjoining dwelling units. Shri Narender Singh Pawar who was residing in Qr. No. 795 jumped into the fire unmindful of his own safety, switched off the mains and removed valuable household items and rescued the child. In this way, he averted a big fire which could have proved to be a major disaster.

Shri Narender Singh Pawar showed exemplary courage and promptitude in saving the life of a child unmindful of the risk involved to his life.

53. Shri Harinder Pal,
Qr. No. 508, Sector VIII,
R. K. Puram, New Delhi.

On 27-12-1991, a big fire broke out in Qr. No. 508, Sector-VIII, R. K. Puram. On seeing the smoke coming out of the quarter and hearing the cries of the ladies trapped inside the quarter, Shri Harinder Pal rushed towards the burning house and after putting his life a great risk, he was able to avert a great disaster and could save the lives of two hapless ladies.

Shri Harinder Pal showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of two ladies from burning, unmindful of the risk involved to his own life.

54. Captain Rosary Joseph Paldano,
210, Pathirakari Ammankoli Street,
Tuticorin-628002,
Tamil Nadu.

The boat 'Kaim' with 12 fishermen on board left Minicoy on 6-11-90 for fishing but could not return to the island due to engine trouble. The strong current and unfavourable wind made it impossible for the fishermen to use the sail. On getting direction from the Port Authorities to conduct a rescue operation for the missing boat, Capt. Rosary Joseph Paldano commanding "M. V. Amindivi" started the rescue operation on 9th November, 1990 at 2 P.M. Although the sea was extremely turbulent, he undertook the search mission at considerable risk not only to his vessel but also to his own life. Despite strong wind and current especially in the 9 h degree channel which is known for strong current and an extremely difficult area for navigators to negotiate ships like 'M.V. Amindivi' which Capt R. J. Paldano was operating; he continued the mission assigned to him. The efficiency and skill that he had shown in the high seas to save the trapped fishermen helped him to finally locate the boat on the morning of 10th November, 1990. The fishermen were immediately given first aid and food and water and brought back safely to Minicoy.

Cap. R. J. Paldano thus saved not only the lives of 12 fishermen but towed to safety the boat valued around 12 lakhs. It was only because of Capt. Paldano's skillful manoeuvring and dedication to duty that such a tremendous task was made possible.

55. Major Kiran Kumar Dangwal (I.C. 30339) Engineers,
Garrison Engineer (East),
Lucknow.

Major Kiran Kumar Dangwal was on leave at Nainital. On 27-3-1991, at around 10 P.M while he was returning home from lake side, he heard two boats colliding on the lake and

people shouting for help. Without a moment's delay, he immediately jumped into the water and reached the overturned boat and single handedly saved three lives and brought safely to the side alongwith the overturned boat. During the whole operation, Shri Dangwal consoled them, passing instructions while ferrying them to the side.

Major Dangwal displayed exemplary courses and promptitude in saving three civilian lives at the risk to his own life.

56. 14702105 Sepoy Dinesh Prasad,
1, NAGA, C/o 56 APO.

Sepoy Dinesh Prasad was on Annual Leave at his home located in village Lanthuru of Uttarkashi Distt. On 20-10-1991, while he was sleeping in his house, an earthquake of massive intensity struck this region at about 0300 hrs. Due to the intense shock waves, he was woken up. For a while, he was dazed. However, he collected his wits and ran out of the house alongwith a cousin who was sleeping in the same room. The moment they came out of the house, the whole structure crashed. Then he went to adjoining house and through a small hole he made entry into the collapsed house through the debris in the darkness of the night and rescued the inmates in a slow and labourious process. After that, he went to the adjoining village Didsari and continued his rescue work. Wherever he found the slightest sign of life or any shouting/shriking from inside, he removed debris, made way for himself to get inside and with great care, he brought out the wounded and gave them whatever little first aid that could be provided under the circumstances. He did not pay any heed to his personal safety and continued to carry on with what he perceived was his duty and saved at least 50 lives that could have otherwise perished.

Sepoy Dinesh Prasad showed courage of a high order, promptitude and selfless dedication in saving a large number of lives unmindful of his personal safety and beyond the call of duty.

57. 2870126 Lance Havildar Raja Ram,
17th Rajputana Rifles (Sawai Man),
C/o 99 APO.

Lance Havildar Raja Ram was serving in high altitude area with the Unit (17th Battalion, The Rajputana Rifles—Sawai Man) in February 1992. On 9-2-1992, he was detailed as guard commander in the transit bus. At 1530 hrs. while returning from Gangotri to 236 Transit Camp (Kyangnosla) the transit bus stopped a Mile Stone 15 area as the road ahead was blocked by a snow slide. Another one ton vehicle which was travelling ahead of the transit bus was also stranded due to the road block. Lieutenant Col. A. D. Thombre, Officer Commanding 236 Transit Camp who was travelling in the one ton vehicle with his son and brother-in-law, decided to cross the road block area and move to Kyangnosla on foot. As he was crossing the road block area alongwith his son, Lt. Col A. D. Thombre was suddenly caught and swept away by a major avalanche. Lance Havildar Raja Ram immediately obtained a rope from the civilian truck and volunteered to go down the hill for rescue. He slithered down the sheer hill-side. The rope could only reach 120 mts. and risking his own life, he moved down another 130 mts of steep snow covered hill side to reach the nala bed. With super-human effort, and despite all odds, he managed to carry Lt. Col. A. D. Thombre and his son, one by one upto the rope end from where they were pulled up by the rescue party. After both the victims were safely rescued, Lance Havildar Raja Ram made use of the himself for being pulled up the hill side. For undertaking all the strenuous exercise, by the time he was pulled up, he had fainted and was suffering from chest pain and also severe body cramps due to exposure to cold coupled with injuries on his neck and left thigh in the course of his daring rescue atempt.

Lance Havildar Raja Ram displayed tremendous initiative and exceptional courage, with utter disregard to his personal safety, in saving two lives from sure death.

58. JC-151353 Subedar Dev Singh Negi,
9, Garhwal Rifles,
C/o 56 APO.

On 10-6-92 Subedar Dev Singh Negi was moving in a 3 ton vehicle alongwith 15 other ranks from Harsil to Uttarkashi. At about 1800 hours, when the vehicle approached village Naitala, he noticed that one civil bus moving from Uttarkashi to Gangotri had gone down approximately 30 mts. into a knud towards fast flowing river Bhagirathi. The bus was badly damaged and a numoer of people were seriously wounded, some thrown outside from the rolling bus and some trapped inside. Showing striking presence of mind and initiative, he swung his men into action. The slope was too steep for bringing up the casualties. Using ropes, he led his men close to the bus. Showing utter disregard to his personal safety, he personally went into the damaged bus, precariously hanging on the slope, to recover two of the trapped victims He organised first aid to the wounded and shifted seriously injured. Displaying exceptional leadership and organisational capacity he successfully brought all the 23 wounded passengers up on the road, 15 of them in serious conditions. He motivated some taxi and jeep owners and escorted the 15 seriously injured victims to the District Hospital, Uttarkashi.

Subedar Dev Singh Negi displayed tremendous initiative, exceptional leadership qualities, courage and promptitude in saving 23 lives that would have been lost.

59. Shri P. Lakshmana,
Suddaguddana Palya Tavarekere Main Road,
Near Christ School,
16, 5th Cross Bharatti Layout,
Bangalore.

On 23-10-1992 at 0930 hours, a 6 ft. black Cobra was sighted in the varanda of a Creche which houses nearly 8 children aged between 1 and 4 years. The two lady assistants working in the Creche were helpless and scared to do anything. Shri Laskshmana C/M II, who happened to pass that way heared the noice and rushed to the scene. He saw that the Cobra was standing with its hood raised in pride. Shri Lakshmana daringly caught the Cobra by its head and though he could kill it, he put the black Cobra in a glass case very tactfully and handed over the snake to National Park, Bannerghatta. But for his presence of mind and spontaneous action, the lives of eight children and two lady assistants could have been lost.

Shri Lakshmana showed conspicuous courage in saving the lives of 8 innocent and helpless children and two lady assistants unmindful of the risk involved to his own life.

60. GO-1905-P AEE (E&M) Umrao Singh Negi,
1068-FD WKSP (GREF) C/o 99 APO.

GO-1905-P Umrao Singh Negi, Assistant Executive Engineer (Electrical & Mechanical) was deployed as Workshop Officer, In a high altitude area of Arunachal Pradesh. On 12-6-93, he was supervising repair works of Nissan 1 Town BA No. 16677 X on which vehicle Mechanic Rajeev Prasad was working. Suddenly, he saw one TATA LPT rolling in reverse due to down gradient. He anticipated that vehicle Mechanic Rajeev Prasad was unaware of the rolling vehicle, and was direcly in the way of the rolling vehicle which would endanger his life. He reacted immediately and pulled vehicle Mechanic Rajeev Prasad aside and further pushed him to a safer place, thus saving his life. In the process, the officer himself fell down and was hit by the rolling vehicle Its rear wheel struck his right leg causing severe injury and fracture.

GO-1905-P AEE (E&M) Umrao Singh Negi displayed conspicuous courage, presence of mind and devotion to duty of a very high order in saving the Life of his subordinate with utter disregard to his own personal safety.

61. G/172193-W OEM Kashmir Singh,
55 Road Construction Coy.,
16 B.R.T.F., C/o 56 APO.

During his deployment on summer snow clearance of Dress-Zozila Road, G/172193-W OEM Kashmir Singh exhibited great sense of devotion to duty, courage, and selfless working from 0600 hrs to 2200 hrs for 20 days continuously unmindful of personal safety and comforts. On 10-5-1993 he was deployed in the Sector of 56 RCC (Beacon) Km 107 and beyond towards Sonamarg. While he was operating his dozer, he saw 2 persons and 3 mules being taken away by snow slide towards the valley side. He immediately stopped the dozer and jumped into the snow slide endangering his own life. Skidding on snow, he reached the spot to find that two persons and the three mules were entrapped under snow. Exhibiting great courage, he extricated all of them one by one out of snow. Due to shortage of oxygen, he himself suffered exhaustion and remained semiconscious for about 20 minutes.

G/172193-W OEM Kashmir Singh exhibited exceptional dedication, determination, courage and humaneness in saving the lives of human beings and animals with utter disregard to his own safety.

62. CODE NO 16409 CP MATE ATWARI RAI,
Village Seshar Garh, Post Sikaripara,
Distt. Dumka, Bihar.

63. CODE NO. 16350 CP MATE SAKARIA HEMRAM,
Village Jilkia, Post Nachungarya,
Distt. Dumka, Bihar.

Code No. 16409 CP MATE Atwari Rai and Code No. 16350 CP MATE SAKARIA Hemram had been working on road Lawngtlai-Diltlang-Parva in South Mizoram. On 19-6-1993, unusual heavy rains caused flash floods and the water level in Mongpui river rose by over 6 metres. The fast current of the flood water hit the temporary bailey bridge at KM 38.5 and washed it away during night hours. On 20-6-1993, Capt. P. Venkateswarlu, OIC 483 RM P1, hired a country boat and tried to locate the washed bridge to retrieve its components and to plan construction of an improvised contrivance for crossing the river. CP Mates Atwari Rai and Sakaria Hemram were also in the boat to assist the officer. While ferrying in the middle of the river, a strong current hit their boat and it capsized throwing all occupants over board. The boatman and other CP Mates swam to the shore. The officer who was busy in gauging the depth of the water was caught unaware, started drifting down in the fast current. On seeing this, CP Mates Atwari Rai and Sakaria Hemram instantly jumped back into the turbulent water and succeeded in rescuing the officer from drowning after sustained valiant efforts.

CP Mates Atwari Rai and Sakaria Hemram showed remarkable courage, grit and dedication to the noble cause of saving the valuable life of an officer with scant regard for their own lives.

64. 4263165 Sepoy Rama Nand Thakur,
12, Bihar, C/o 99 APO.

On 15th September, 1992, Sepoy Rama Nand Thakur was on surveillance duty at the choke point of Mangaldai Bridge during OPERATION RHINO. Near the place of surveillance post, there are four big ponds (Pukhanes) around which a cluster of huts exists.

At about 1730 hours, from a distance of about 150 meters, Sepoy Rama Nand Thakur noticed a small child slipping into one of the ponds. This pond is muddy and measures about 10 to 12 feet in depth. Though many people witnessed the incident but none had the courage to jump into the deep waters. Without wasting any time, Sepoy Rama Nand Thakur at once rushed to the site of the incident and with utter disregard to his personal safety jumped fully clothed into the pond, swam upto the three years old drowning child and brought him out to safety. With great presence of mind and initiative, he administered life saving resuscitation to Master Ananta Das S/o Shri Amrit Das, and arranged for his speedy evacuation to his Battalion Headquarters where the Regimental Medical Officer treated him.

Sepoy Rama Nand Thakur showed conspicuous courage and foresight and saved the life of a three years old drowning child without caring for the risk involved to his own life.

65 Ex-cadet Corporal (NCC) Ajit Pal Dhiman, (Posthumous)
5 Punjab Battalion,
National Cadet Corps Patiala.

On 11th July, 1993, PB/JD/90/18452, Ex-Cadet Corporal (NCC) Shri Ajit Pal Dhiman, who had gone from Sirhind to Fatehgarh Sahib for an entrance test for an engineering examination noticed that due to torrential rains, the area of Sirhind and Fatehgarh Sahib was inundated. He also saw some people stranded on the rooftops with the main road under 5 feet of flood waters: not allowing anyone to attempt rescue missions. Being an Ex-NCC Cadet Shri Dhiman fearlessly and without caring for his personal safety, jumped into the water to reach the marooned people. Despite the fast current of water, he was successful in saving a number of lives and continued his mission non-stop. Influenced by his initiative and bravery, some people also came forward for help. However, in the process of evacuating people to safety, Ex-Cadet Corporal Ajit Pal Dhiman was himself swept away by the fast current and lost his life.

Cadet Corporal Ajit Pal Dhiman thus displayed conspicuous bravery and selfless spirit of service in saving the lives of people marooned in the flood and in the process made the supreme sacrifice.

G. B PRADHAN
Director

MINISTRY OF STEEL

New Delhi, the 31st January 1994

RESOLUTION

No. 22(7)/92-TW.—In partial modification of Resolution No. 22(7)/92-TW dated 27th August, 1993 it has been decided that the following will also be a member of the Panel of Judges to evaluate the performance of the Integrated Steel Plants for the year 1992-93.

1. Shri Permanand Tripathi,
General Secretary Bokaro Steel Workers' Union,
19, Co-operative Housing Colony,
Bokaro Steel City-827001

ORDER

Ordered that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

Ordered also that the Resolution be published in Gazette of India for general information

K. KIPGEN, Jt. Secy.

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (DEPARTMENT OF EDUCATION)

New Delhi, the 18th February 1994

RESOLUTION

No. F.25-4/93-U.3 - In terms of the provisions contained in Rule 10 of the Rules and Regulations of the Indian Council of Philosophical Research, New Delhi, Prof. Mrinal Miri, Director, Indian Institute of Advanced Study, Shimla, is appointed as the Chairman of the Indian Council of Philosophical Research for a term of 3 years from the dated on which he assumes chage.

ORDER

Ordered that a copy of the Resolution be communicated to the Member Secretary, Indian Council of Philosophical Research 4th Floor, Rajendra Bhavan, 210, Deen Dayal Upadhyaya Marg, New Delhi-110 002.

Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information

D. S. MUKHOPADHYAY, Jt. Secy.

The 24th February 1994

RESOLUTION

No. F.6-7/91-U.3.—Whereas in pursuance of Rule 3 of the Rules and Regulations of the Indian Institute of Advanced Study Society, Shimla, Government of India reconstituted the Society of the Indian Institute of Advanced Study vide Resolution No. F.6-7/91-U.3 dated 1st January, 1992.

And whereas, the Government of India have decided to nominate Dr S. Rame Gowda, Vice-Chancellor, Karnataka University and Dr. D. N. Mishra, Vice-Chancellor, Banaras Hindu University to be members of the Indian Institute of Advanced Study, Shimla.

Now, therefore, the Central Government hereby make the following amendments to the Government Resolution No. F.6-7/91-U.3 dated 1st January, 1992 :—

In the said Resolution for (2) & (6) under "3(b)(i) Six Vice-Chancellors of Indian Universities nominated by the Central Government", the following shall be substituted :

(2) Dr. S. Rame Gowda,
Vice-Chancellor,
Karnataka University,
Pavate Nagar, Dharwad-580 003.

(6) Dr. D. N. Mishra,
Vice-Chancellor,
Banaras Hindu University,
Varanasi-221 005.

D. S. MUKHOPADHYAY, Jt. Secy.

(DEPARTMENT OF CULTURE)

New Delhi, the 18th February 1994

RESOLUTION

No. F.15-25/93-CH-Desk/Vig.—In supersession of this Department's Resolution No. 7-10/82-CH-I dated 16-8-1989 and and partial modification of Resolution No. 7-10/82-CH-1 dated 14-12-1987, the Central Government hereby substitutes the following entry for entry (ii) below Rule No. 3 relating to composition of the Indira Gandhi Rashtriya Manav Sahgrahalaya Samiti :—

"Vice President—Additional Secretary/Joint Secretary,

Department of Culture, Government of India (ex-officio)".

ORDER

Ordered that a copy of this Resolution be communicated to the Acting Director, Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya, Post Bag No. 7, Sector E/5, Tawa Housing Board Complex, Area Colony, Bhopal-462016.

Ordered that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

G. VENKATARAMANI, Director.

MINISTRY OF WELFARE

New Delhi-1, the 21st July 1993

RESOLUTION

No. 25-1/88-H.W-III.—In continuation of this Ministry's Resolution of even number dated 22nd June, 1993 regarding constitution of the Rehabilitation Council of India, the following members is nominated in addition to the earlier members. Medical Practitioner engaged in Rehabilitation of Handicapped :

1. D. R. K. Srivastava, Consultant and Head of the Department of Rehabilitation, Safdarjung Hospital, New Delhi.

2. Dr. R. K. Srivastava shall hold Office for a term of two years from the date of his appointment or until his successor shall have been duly appointed, whichever is longer.

3. Other condition of his nomination will be as contained in Resolution dated 22nd June, 1993.

ORDER

Ordered that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

2. Ordered that a copy of the Resolution be communicated to all Ministries/Departments of Government of India, State Governments, Administrators of the UTs, Cabinet Sectt., Planning Commission, Prime Minister's Office, Lok Sabha and Rajya Sabha Sectt.

A. K. CHOUDHARY, Jt. Secy.

MINISTRY OF WELFARE

The 25th September 1993

RESOLUTION

No. 25-1/88-H.W-III.—In continuation of this Ministry's Resolution of even number dated 22nd June, 1993 and 21st July, 1993 regarding constitution of the Rehabilitation Council of India, the following members are further nominated with immediate effect in addition to the earlier members :—

I. *Members from amongst the medical practitioners and engaged in rehabilitation of the handicapped*

(i) Prof. V. K. Dada,
Head of the Department,
R. P. Centre, All India Institute of Medical Sciences,
New Delhi.

(ii) Dr. S. Nikam,
Director, All India Institute of Speech and Hearing,
Bangalore.

II. *Members from amongst the rehabilitation professionals*

(i) Smt. Sudha Kaul,
Director, Spastics Society of Eastern India,
Calcutta.

(ii) Dr. R. R. Kanojia,
Ortheopatic Surgeon, Patna Medical College and Hospital, Patna.

III. *Members from amongst Social Workers*

(i) Prof. H. Y. Siddique,
Prof. of Social Work,
Jamia Millia University, Delhi.

(ii) Prof. K. A. Chandrasekharan,
Faith India, Thiruvananthapuram.

(iii) Representative of Missionaries of Charity,
Calcutta.

(Mother Taresa's representative).

IV. *Member from University Grants Commission*

(i) Prof. D. P. Singh, Member,
U.P.S.C.

V. *The Members-Secretary, ex-officio*

(i) Shri J. P. Singh.

2. The members shall hold office for a term of two years from the date of his appointment or until his successor have been duly appointed, whichever is longer.

3. Other conditions of nomination will be as contained in Resolution dated 22nd June, 1993.

ORDER

Ordered that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

2. Ordered that a copy of the Resolution be communicated to all Ministries/Departments of Government of India, State Governments, U.T. Administrations, Cabinet Secretariat, Planning Commission, Prime Minister's Office, Lok Sabha and Rajya Sabha Secretariat.

A. K. CHOUDHARY,
Jt. Secy.

The 6th December 1993

RESOLUTION

No. 25-1/88-H. W-III.—In continuation of this Ministry's Resolution of even number dated 22-6-1993, 21-7-1993 and 25-9-1993 regarding constitution of the Rehabilitation Council of India, the following member is nominated in addition to the earlier members :—

Members from Indian Council of Medical Research

Dr. C. R. Ramachandran,
Director-Grade-Scientist,
I.C.M.R., Ansari Nagar, Post Box No. 4508,
New Delhi-110 029.

2. Dr. Ramachandran shall hold office for a term of two years from the date of his appointment or until his successor shall have been duly appointed, whichever is longer.

3. Other conditions of his nomination will be as contained in Resolution dated 22nd June, 1993.

ORDER

Ordered that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

2. Ordered that a copy of the Resolution be communicated to all Ministries/Departments of Government of India, State Governments, Administrators of the U.Ts, Cabinet Secretariat, Planning Commission, Prime Minister's Office, Lok Sabha and Rajya Sabha Sects.

A. K. CHOUDHARY,
Jt. Secy.

MINISTRY OF LABOUR

New Delhi, the 28th February 1994

No. V-18011/4 93-ISH-I.—In pursuance of clause (b) of Rule 7 of the Rules and Regulations of the National Safety Council, the Central Government hereby nominate Shri C. B. Garware as Chairman of the Board of Governors of the National Safety Council for a further term of three years, with effect from 31st December, 1993.

R. T. PANDEY,
Dy. Secy.

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1994
Printed by the Manager, Govt. of India Press, Faridabad and Published by the Controller of Publications, Delhi, 1994